खण्ड - 'ग' (नाटक)

महाकविकालिदासविरचितम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(चतुर्थोऽङ्कः)

[(आकाशे) रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः ... इत्यादि]

महाकवि कालिदास

कालिदास का जीवन-परिचय एवं समय

(2017 NF, 19 CZ, DC, DD, DF, 20ZT)

नोट–कालिदास का जीवन-परिचय, रचनाएँ एवं समय पुस्तक के द्वितीय भाग 'रघुवंशमहाकाव्यम्' में देखें।

कालिदास की नाट्य-कला

(2008EO,EQ,ER,ET,11HQ,HS,HT,HV,HW,14 CL,CM,CN,CO, 16 TH, TI, TG, 17 NG, NH, 18 BC, BD)

कालिदास प्रत्येक वस्तु का चित्र नेत्रों के सामने उपस्थित करने में सक्षम हैं। वे मानव हृदय की कोमल भावनाओं, उसकी उत्सुकता, विह्वलता और भावावेशों का अत्यन्त सुन्दर वर्णन करते हैं। उनका प्रकृति-वर्णन केवल मनोरञ्जन का साधन मात्र नहीं है, वह मनुष्य को शिक्षा भी प्रदान करता है। कालिदास ने चरित्र-चित्रण और वस्तुओं के सजीव वर्णन में कुशलता दिखायी है।

घटना-संयोजन– 'अभिज्ञानशाकुन्तल' में घटनाओं का संयोजन पूर्णरूप से स्वाभाविक है, साथ ही उसमें असाधारण सौष्ठव भी विद्यमान है। प्रत्येक घटना सार्थक है, अतः कथानक के विकास में पूरी तरह सहायक है। फलतः नाटक की गति स्वाभाविक और अविच्छिन्न है। जैसे– राजा का शकुन्तला से गान्धर्व-विवाह, दुर्वासा का शाप, दुष्यन्त का अपने नाम की अँगूठी देना, दुर्वासा द्वारा उसी अँगूठी को दिखाने पर शाप-मोचन आदि सभी घटनाएँ सुसम्बद्ध हैं।

घटनाओं की सार्थकता– 'अभिज्ञानशाकुन्तल' की प्रत्येक घटना सार्थक है और किसी विशेष उद्देश्य से रखी गयी है। जैसे–दुर्वासा के शाप से दुष्यन्त का शकुन्तला को भूलना, अँगूठी खोना, पुनः अँगूठी का मिलना, शकुन्तला-दुष्यन्त का मिलन, कण्व का शकुन्तला की विपत्ति दूर करने के लिए सोमतीर्थ जाना आदि।

वर्णनों की स्वाभाविकता व सजीवता– कालिदास का प्रत्येक वर्णन स्वाभाविक होने के साथ-साथ सजीव भी है।

वे आँखों के सामने साक्षात् चित्र-सा उपस्थित कर देते हैं। जैसे–चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई का वर्णन, शकुन्तला के द्वारा लता, मृगशावक, सखियों, पिता आदि से विदाई लेना, कण्व का पुत्री के वियोग से अधीर होना, कण्व के द्वारा शकुन्तला को पतिगृह के लिए यथोचित उपदेश देना आदि सभी घटनाएँ स्वतः आँखों के सामने उपस्थित-सी हो जाती हैं।

रचना-कौशल– महाभारत के एक नीरस कथानक को कालिदास ने अपने रचना-कौशल से 'अभिज्ञानशाकुन्तल' नामक एक सरस सुविख्यात नाटक में परिवर्तित कर दिया है।

घटनाओं की ध्वन्यात्मकता– कालिदास की रचनाओं में वर्णन और घटनाएँ संकेतात्मक होती हैं। वे भावी घटनाओं की ओर संकेत करती हैं। शाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में ही सूत्रधार के द्वारा कालिदास यह संकेत देते हैं कि नाटक में भूलना महत्त्वपूर्ण है। दुष्यन्त का शकुन्तला को भूलना, शकुन्तला का दुर्वासा के सत्कार को भूलना, भूल से अँगूठी का खो जाना आदि महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं। चतुर्थ अङ्क में प्रभात-वर्णन 'यात्येकतोऽस्तशिखरं' (4/2) के द्वारा सुख-दुःख के क्रम को अनिवार्य बताया गया है, जो सूचित करता है कि शकुन्तला पर आयी विपत्ति टल जायगी।

चरित्र-चित्रण–कालिदास चरित्र-चित्रण में सिद्धहस्त हैं। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के पात्र समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि हैं। उसके प्रत्येक पात्र का अपना विशिष्ट व्यक्तित्व है, जैसे– दुर्वासा अत्यन्त क्रोधी, शकुन्तला लज्जाशील, अनसूया शान्त व विवेकशील एवं प्रियंवदा हास्य-प्रिय है।

पात्रों के अनुकूल भाषा–कालिदास के प्रत्येक पात्र अपनी स्थिति के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग करते हैं। प्रियंवदा और अनसूया सखीजनोचित हास-परिहास करती हैं। कण्व पिता के समान शकुन्तला का अभिनन्दन करते हैं– **सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता।**

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में रस-निरूपण– शाकुन्तल शृङ्गार रस प्रधान नाटक है। इसमें सम्भोग शृङ्गार अङ्गी रस है और विप्रलम्भ शृङ्गार है। करुण, वीर, अद्भुत, हास्य, भयानक, वत्सल, शान्त ये अङ्ग रस हैं। यद्यपि शाकुन्तल में विप्रलम्भ शृङ्गार का विस्तार है तथापि नाटक सुखान्त है। अन्त में दुष्यन्त-शकुन्तला का मिलन है, अतः शाकुन्तलम् शृङ्गार प्रधान नाटक है।

कालिदास का काव्य-सौन्दर्य–शाकुन्तलम् में कालिदास ने कई ऐसे प्रसङ्ग उपस्थित किये हैं जो भावों की दृष्टि से अत्यन्त मार्मिक हैं। इनमें कालिदास की कल्पना-शक्ति व नाट्य-कुशलता का विशेष परिचय प्राप्त होता है। जैसे– चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई।

कालिदास का प्रकृति-प्रेम–कालिदास प्रकृति को सजीव और मानवीय भावनाओं से ओत-प्रोत मानते हैं। शकुन्तला वृक्षों को भाई और लताओं को बहन की तरह मानती है और उनकी सेवा करती है। इस प्रकृति-प्रेम से अभिभूत होकर शकुन्तला को पति-गृह जाने के समय वृक्ष और लताएँ वस्त्राभूषण तथा अन्य प्रसाधन उपहार आशीर्वादस्वरूप प्रदान करते हैं।

भाषा एवं शैली–कालिदास की लोकप्रियता का कारण उनकी सरल, परिष्कृत और प्रसाद गुण युक्त शैली है। कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं और वैदर्भी की प्रमुख विशेषता है–मधुर शब्द, ललित रचना, समासों का सर्वथा अभाव या छोटे समासों का होना। इनकी रचनाओं में प्रसाद-माधुर्य गुणों का प्राधान्य है, ओज गुण कम मात्रा में मिलता है।

भाषा सरल, सरस व मनोरम है। उनका शब्दकोश अगाध है। इसी कारण भाषा में असाधारण मनोरमता व प्रवाह है। कालिदास की शैली संक्षिप्त और ध्वन्यात्मक है। वह सुन्दर भावों को सुन्दर भाषा में प्रकट करते हैं। कालिदास ने कथोपकथन में पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है।

अलङ्कार–कालिदास ने शाकुन्तलम् में प्रायः सभी प्रचलित अलङ्कारों का प्रयोग किया है। प्रमुख रूप से उपमा, उत्प्रेक्षा, स्वभावोक्ति, तुल्ययोगिता, समासोक्ति, व्यतिरेक, अर्थान्तरन्यास आदि। कालिदास अपनी उपमाओं के लिए विश्व-विख्यात हैं।

कालिदास संस्कृत साहित्याकाश के देदीप्यमान नक्षत्र हैं। उनकी कविता साक्षात् त्रिवेणी है। उसमें कवित्व गङ्गा की धारा है, भाव तथा कल्पनाएँ यमुना की धारा हैं, कला ज्ञान नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिमा सरस्वती की शुभ्र धारा है।

संस्कृत नाटकों की विशेषताएँ

(2017 NO)

संस्कृत नाटकों के अध्ययन से तथा उनकी यूनानी नाटकों से तुलना करने से कतिपय विशेषताएँ ज्ञात होती हैं। ये विशेषताएँ मुख्यतया कथा, कथावस्तु-संयोजन, आकार, पात्र-संख्या, रस-परिपाक, उद्देश्य, नाट्यशाला-निर्माण आदि की दृष्टि से हैं। विशेष उल्लेखनीय विशेषताएँ निम्न हैं–

(1) सुखान्तता–भारतीय नाटकों में यद्यपि मध्य में सुख और दुःख दोनों का सम्मिश्रण है, तथापि सभी नाटक सुखान्त ही होते हैं। उरुभंग आदि को भी दुःखान्त न समझकर सुखान्त ही समझना चाहिए, क्योंकि भारतीय परम्परा के अनुसार पापी का वध भी सुखकर होता है। इसलिए ऐसे नाटक सुखान्त ही समझने चाहिए।

(2) रमणीय कल्पना–भारतीय नाटक स्वरूपतः रमणीय-कल्पना-प्रधान होते हैं। इनमें शृंगार और वीर-रस के रोचक उपाख्यान मुख्यतः होते हैं।

(3) कथावस्तु प्रचलित, ऐतिहासिक या कथा-ग्रन्थों पर आधारित–संस्कृत के नाटक मुख्यतया रामायण, महाभारत, पुराण, बृहत्कथा आदि के कथानकों पर आश्रित हैं।

(4) अन्वितित्रय का अभाव–यूनानी नाटकों में काल, स्थान तथा गति की अन्विति पर बहुत बल दिया गया है, परन्तु संस्कृत नाटकों में इस अन्वितित्रय की सर्वथा उपेक्षा की गई है।

(5) सहगान का अभाव–यूनानी नाटकों में सहगान का बहुत प्रचलन है, परन्तु संस्कृत नाटकों में इसका अत्यन्त अभाव है।

(6) रूपक और उपरूपकों के भेद–संस्कृत नाट्यशास्त्र में रूपकों के 10 भेद तथा उपरूपकों के 18 भेद माने गये हैं। इनके स्वरूप, अंक-सख्या, पात्र आदि के विषय में गंभीर विवेचन किया गया है। अतएव भारतीय नाट्यशास्त्र अत्यन्त जटिल हो गया है। इस प्रकार का विभाजन और विवेचन आदि यूनानी नाटकों में नहीं है।

(7) गद्य-पद्य का मिश्रण–संस्कृत नाटकों में कथोपकथन के लिए गद्य का प्रयोग किया जाता है। रोचकता, प्रकृति-वर्णन, नीति-शिक्षा, सुभाषित आदि के लिए पद्यों का प्रयोग किया जाता है, इस प्रकार गद्य और पद्य का समन्वय रहता है।

(8) संस्कृत के साथ प्राकृतों का प्रयोग–संस्कृत-नाटकों में प्रथम श्रेणी तथा मध्यम श्रेणी के पुरुष पात्र संस्कृत भाषा का प्रयोग करते हैं। सभी स्त्री-पात्र और अधम श्रेणी के पात्र प्राकृत में बोलते हैं। प्राकृत-पद्यों की रचना मुख्यतया महाराष्ट्रीय प्राकृत में होती थी। प्राकृतों में विशेष रूप से महाराष्ट्री, शौरसेनी और मागधी का प्रयोग हुआ है। सभी कोटि के पात्र संस्कृत समझते थे, किन्तु अपने सामाजिक स्तर के अनुसार संस्कृत या प्राकृत बोलते थे।

(9) कथा-प्रवाह पर बल नहीं–यूनानी नाटकों के तुल्य संस्कृत नाटकों में कथा-प्रवाह की तीव्रता नहीं है और गति पर इतना बल भी नहीं दिया गया है।

(10) नाटकों की रचना-विधि–संस्कृत-नाटकों की रचना की एक विशेष विधि है। पूरा नाटक कई अंकों में विभक्त होता है। नान्दी-पाठ से प्रारम्भ, सूत्रधार द्वारा स्थापना, स्थापना या प्रस्तावना में कवि-परिचय, संक्षेप या कथानक को जोड़ने के लिए विष्कम्भक और प्रवेशक का प्रयोग, भरत-वाक्य से समाप्ति आदि संस्कृत-नाटकों की रचना-विधि की विशेषताएँ हैं।

(11) विदूषक की कल्पना–यूनानी नाटकों में Clown या Fool नाम का पात्र केवल मनोरंजन या हास्य के लिए होता है, परन्तु संस्कृत-नाटकों में विदूषक हास्य के साथ ही कथानक की प्रगति में सहायक होता है और यथावसर नायक को परामर्श आदि देता है।

(12) नाटकों में अभिनय-संकेत–संस्कृत-नाटकों में अभिनय-सम्बन्धी संकेत यथास्थान सूक्ष्मता के साथ दिये जाते हैं। जैसे–प्रकाशम्, स्वगतम्, अपवारितम्, जनान्तिकम्, आकाशे, सरोषम्, विहस्य, ससंभ्रमम्। शाकुन्तल अंक 3 में–इति मुखमस्याः समुन्नमयितुमिच्छति। शकुन्तला परिहरति नाट्येन, ऐसे संकेतों से अभिनेता को अभिनय में पूरी सुविधा होती है।

(13) अर्थ-प्रकृतियाँ आदि–संस्कृत-नाटकों में 5 अर्थ-प्रकृतियों, 5 अवस्थाओं और 5 सन्धियों का प्रयोग होता है।

(14) नाटक का आकार–यूनानी नाटकों की अपेक्षा संस्कृत-नाटकों का रूप बहुत बड़ा होता है। यह इस उदाहरण से जाना जा सकता है कि शूद्रक का मृच्छकटिक आकार में ऐस्काइलस के प्रत्येक नाटक से तिगुना है।

(15) पात्र-संख्या अनियत–संस्कृत-नाटकों में पात्रों की संख्या का निर्धारण नहीं है। लौकिक, दिव्य और अदिव्य सभी प्रकार के पात्र होते हैं। यूनानी नाटकों में पात्रों की संख्या बहुत कम होती है।

(16) पात्र समूह-विशेष के प्रतिनिधि–संस्कृत-नाटक व्यक्ति-विशेष के प्रतिनिधि न होकर समूह-विशेष का प्रतिनिधित्व करते हैं। जैसे–शकुन्तला स्त्री-विशेष का प्रतिनिधित्व करती है।

(17) रस-विशेष का परिपाक–संस्कृत-नाटकों में अंगी रूप से शृंगार, वीर या करुण रस का परिपाक लक्ष्य होता है। यूनानी नाटकों में इसका अभाव है।

(18) अनुचित प्रदर्शनों पर रोक–संस्कृत-नाटकों में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि अनुचित, अशिष्ट, असभ्य और अशुभ दृश्य रंगमंच पर न दिखाए जायँ। जैसे–चुम्बन, आलिंगन, संभोग, युद्ध, मृत्यु, भोजन, शापदान आदि।

(19) लक्ष्य-शान्ति और अनौद्धत्य–संस्कृत-नाटकों का लक्ष्य है–शान्ति और अनुद्धतता की स्थापना तथा सुख-समृद्धि की कामना।

(20) लोक-मनोरंजन–संस्कृत-नाटकों का उद्देश्य है–लोक-मनोरंजन। अतः नाटक सुखान्त ही हों, इस बात पर बल दिया गया है।

(21) आदर्श-प्रधान एवं नैतिक–संस्कृत-नाटकों का उद्देश्य है–मनोरंजन के साथ ही स्वस्थ नैतिकता एवं उच्च आदर्शों का जन-मानस में संचार करना।

(22) नाट्यशाला का आकार–संस्कृत-नाटकों के प्रदर्शन के लिए जिन नाट्यशालाओं का प्रयोग होता था, वे वर्गाकार, आयताकार या त्रिभुजाकार होती थीं।

(23) प्रदर्शन के अवसर–संस्कृत-नाटकों के प्रदर्शन विशेष अवसर पर ही किये जाते थे। जैसे–पर्व, उत्सव, पुत्र-जन्म, राजतिलक, विवाह, गृहप्रवेश आदि।

(24) प्रकृति-वर्णन और प्रकृति-तादात्म्य–संस्कृत-नाटकों में प्रकृति-वर्णन को महत्त्व दिया गया है। साथ ही नाटककार प्रकृति के साथ तादात्म्य का सुन्दर निरूपण करते हैं।

(25) एकांकी नाटकों का प्रचलन–भास आदि के नाटकों से ज्ञात होता है कि संस्कृत में एकांकी नाटकों का पर्याप्त प्रचलन था। भास के नाटकों में 5 एकांकी नाटक हैं।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् : चतुर्थ अङ्क का सारांश

(2011 HU, 12 EH, 16 TD, DR, 17 NF, NI, 18 BD, BE)

फूल चुनती हुई प्रियंवदा और अनसूया के आपसी वार्त्तालाप से चतुर्थ अङ्क का प्रारम्भ होता है। अनसूया प्रियंवदा से कहती है कि राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला से गान्धर्व विवाह कर लिया है, परन्तु मेरे हृदय में शान्ति नहीं है। आज ही वह राजर्षि यज्ञ की समाप्ति पर ऋषियों से विदा लेकर अपने नगर को चला जायगा। वहाँ जाकर इस शकुन्तला का स्मरण करेगा या नहीं? पर्णशाला में दुष्यन्त के ध्यान में मग्न शकुन्तला बैठी हुई थी। इसी बीच दुर्वासा ऋषि का अतिथि रूप में आश्रम में आगमन होता है। अतिथि-सत्कार प्राप्त न होने पर क्रुद्ध दुर्वासा शकुन्तला को शाप देते हैं कि जिसका स्मरण करती हुई तू मुझ–जैसे तपस्वी का आतिथ्य नहीं कर रही है, वह याद दिलाने पर भी तुझे स्मरण नहीं करेगा। प्रियंवदा के अनुनय-विनय से प्रसन्न होकर दुर्वासा शापमुक्त होने का उपाय बताते हैं कि यदि वह उसके पहचान का आभूषण दिखा देगी तो शाप समाप्त हो जायगा। अनसूया और प्रियंवदा शाप की बात न शकुन्तला को बताती हैं और न अन्य किसी भी व्यक्ति को, क्योंकि वे समझ रही थीं कि दुष्यन्त की नामाङ्कित अँगूठी शकुन्तला के पास है। वह उसे दिखला देगी तो शाप स्वतः समाप्त हो जायगा। शाप की बात बताने से सभी अकारण चिन्तित हो जायँगे।

सोमतीर्थ यात्रा से लौटे महर्षि कण्व को आकाशवाणी से ज्ञात हुआ कि शकुन्तला का गान्धर्व विवाह राजा दुष्यन्त के साथ हो गया है और वह गर्भिणी भी है। कण्व शकुन्तला के इस कृत्य का अभिनन्दन करते हैं। दुर्वासा के शाप के प्रभाव से शकुन्तला को बुलाने के लिए राजर्षि दुष्यन्त ने किसी भी व्यक्ति को नहीं भेजा। शकुन्तला को पतिगृह भेजने के लिए कण्व प्रबन्ध करते हैं। शकुन्तला की विदाई की तैयारी होती है। वनवृक्षों द्वारा शकुन्तला के लिए रेशमी वस्त्र, पैरों पर लगाने के लिए अलक्त (महावर) तथा विभिन्न अङ्गों में पहनने योग्य आभूषण प्रदान किये जाते हैं। उन्हें लेकर तापस कुमार नारद आता है और उन्हें गौतमी को देता है कि इनसे शकुन्तला को अलङ्कृत कीजिये। प्रियंवदा और अनसूया शकुन्तला को सुसज्जित करती हैं। इसी बीच में हस्तिनापुर जानेवाले ऋषि शार्ङ्गरव आदि बुलाये जाते हैं। ऋषि कण्व शकुन्तला की विदा के समय उसके वियोग में करुण रस से ओतप्रोत हो जाते हैं। शकुन्तला अपनी सखियों और सहचरी मृगियों आदि से विदा लेती है। महर्षि कण्व शकुन्तला को लेकर जा रहे ऋषिकुमारों के द्वारा राजा दुष्यन्त के लिए सन्देश भेजते हैं कि आप अपने उच्च कुल के अनुसार शकुन्तला की स्नेह प्रवृत्ति पर विचारकर अपनी अन्य पत्नियों के सदृश इससे व्यवहार करें। महर्षि कण्व सामान्य गृहस्थ पिता के समान पतिगृह जाती हुई पुत्री को व्यावहारिक उपदेश देते हैं कि पतिगृह पहुँचने पर सास-ससुर की सेवा, परिजनों के प्रति सहृदयता, पति के प्रति कभी भी विरुद्ध आचरण न करना, अहंकार न करना आदि कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए। कण्व से विदा लेते हुए शकुन्तला पूछती है कि मैं कब इस आश्रम का पुनः दर्शन करूँगी? कण्व आशीर्वाद देते हुए कहते हैं कि दुष्यन्त से उत्पन्न पुत्र को राज्यभार सौंपकर अपने पति के साथ इस आश्रम में शान्ति लाभ के लिए पुनः आओगी। तत्पश्चात् गौतमी और ऋषिकुमारों के साथ शकुन्तला पतिगृह के लिए प्रस्थान करती है। दोनों सखियाँ शकुन्तला से रहित सूने आश्रम में प्रवेश करती हैं। कण्व पुत्री को पति के घर भेजकर हार्दिक प्रसन्नता व सन्तोष का अनुभव करते हुए कहते हैं–

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥

प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

चतुर्थ अङ्क का नाट्य-सौन्दर्य एवं वैशिष्ट्य

(2012 EJ, 14 CP CR, 17 NC, ND, 18 BC, 19 DB, 20 ZS)

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला के पतिगृह गमन का वर्णन है। शकुन्तला आश्रम में बैठी है। वह दुष्यन्त के ध्यान में लीन है। दुर्वासा ऋषि आते हैं। शकुन्तला को उनके आने का पता ही नहीं चलता। क्रुद्ध होकर दुर्वासा शाप देकर चल देते हैं–''जिनके ध्यान में लीन होकर तुम द्वार पर आये अतिथि को भी नहीं देख रही हो, वह तुम्हें बार-बार याद दिलाने पर भी पहचानेगा नहीं।'' बाद में प्रियंवदा के मनाने पर वह इतनी छूट दे देते हैं कि ''अभिज्ञान देखने पर उसे याद आ जायगी।'' यात्रा से लौटे आश्रम के कुलपति काश्यप को समाधिमग्न दशा में शकुन्तला और दुष्यन्त के प्रणय, गान्धर्व विवाह तथा शकुन्तला के गर्भवती होने का पता चल जाता है। वे शकुन्तला को पतिगृह भेजने की तैयारी करते हैं। शकुन्तला की विदाई के समय केवल कण्व ही नहीं, बल्कि तपोवन के सभी देवता, वृक्ष, पक्षी, पशु भी दुःखी हैं। शकुन्तला आश्रम के वृक्षों को जल पिलाकर ही स्वयं पीती थी, कभी कलियों को नहीं तोड़ती थी, वृक्षों में नयी बहार आने पर वह उत्सव मनाती थी। अतः कोयल का मधुर ध्वनि से विदा देना, हिरणों का तृण-परित्याग करना, मयूर का नृत्य त्यागना एवं वनस्पतियों द्वारा अश्रु-रूप में पत्रत्याग करना स्वाभाविक ही है। वस्तुतः पूरा आश्रम विदाईजनित शोक से करुणाप्लावित है।

शकुन्तला अपनी सखियों और सहचरी मृगियों आदि से विदा लेती है। महर्षि कण्व सामान्य गृहस्थ पिता की भाँति पतिगृह जाती हुई पुत्री को व्यावहारिक उपदेश देते हैं। अन्ततः शकुन्तला विदा हो जाती है। विद्वानों का मानना है कि काव्यों में नाटक सबसे अधिक रमणीय है। नाटकों में अभिज्ञानशाकुन्तलम् और अभिज्ञानशाकुन्तलम् में भी चतुर्थ अङ्क सबसे अधिक रमणीय है। चतुर्थ अङ्क में भी चार श्लोक सबसे अधिक प्रिय माने गये हैं–

''काव्येषु नाटकं रम्यं, तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्॥''

शकुन्तला का चरित्र-चित्रण

(2011 HR,HS,HT,12 EG,14 CM,CP,CQ,CR, 16 TF, TI, TG, 17 ND, NF. NG, NI, 18 BC, BD, BE, BG)

शकुन्तला अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका है। वह ऋषि कण्व की पालिता-पुत्री है। उसके वास्तविक जननी-जनक मेनका और विश्वामित्र हैं। शकुन्तला का चरित्र एक आदर्श भारतीय नारी का चरित्र है। उसके चरित्र में अनेक ऐसे गुण हैं, जो उसे नाटक का एक प्रभावशाली पात्र बनाने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

(1) अनुपम सुन्दरी–शकुन्तला अत्यन्त सुन्दर है। उसके प्राकृतिक सौन्दर्य को बाह्य शृङ्गार की आवश्यकता नहीं है–

''इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी।''

राजा दुष्यन्त उसके अलौकिक रूप-सौन्दर्य को देखकर उस पर मुग्ध हो जाते हैं और उसके सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं–

''अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्॥''

(2) शालीनता—शकुन्तला में शालीनता कूट-कूटकर भरी है। वह सुशीला और लज्जाशीला है। राजा दुष्यन्त के सान्निध्य की आकाङ्क्षिणी होते हुए भी जब उसे ऐसा अवसर प्राप्त होता है, तो वह राजा से कहती है—

''मुञ्च तावन्मां भूयोऽपि सखीजनमनुमानयिष्ये।''

(3) पति-प्रेम—शकुन्तला अपने पति राजा दुष्यन्त से अत्यन्त प्रेम करती है, वह उनके वियोग में इतनी व्याकुल हो जाती है कि आश्रम में आये हुए ऋषि दुर्वासा का अतिथि-सत्कार नहीं करती है और उनके शाप की भागी बनती है–

''विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा, तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्, कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥''

(4) प्रकृति-प्रेम—शकुन्तला को पेड़-पौधों, लता-कुञ्जों, पशु-पक्षियों से विशेष अनुराग है। आश्रम से विदा होते समय वह आश्रम के वृक्षों, लताओं के साथ हरिणियों आदि से भी विदाई लेती है– **अवैमि ते तस्यां सोदर्यास्नेहम्।**

(5) पितृ-प्रेम—अपने पिता ऋषि कश्यप के लिए उसके हृदय में अत्यधिक प्रेम एवं श्रद्धा है। अतएव पतिगृह जाते समय वह अपने पिता से बार-बार मिलती है और कहती है–

''कथमिदानीं तातस्याङ्कात् परिभ्रष्टमलयतटोन्मूलिता चन्दनलतेव देशान्तरे जीवितं धारयिष्यामि।''

(6) सखी-प्रेम—शकुन्तला एक सच्ची सखी है। वह अपनी सखियों प्रियंवदा एवं अनुसूया से विशेष अनुराग रखती है। आश्रम से विदा के समय सखियों से विदा होने का उसे अपार दुःख होता है। वह ऐसा अनुभव करती है कि सखियों के बिना उसका शृङ्गार दुर्लभ हो जायगा–

''इदमपि बहु मन्तव्यम्। दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं भविष्यति॥''

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि कालिदास को शकुन्तला के रूप में एक आदर्श भारतीय नारी के प्रेममयी रूप का चित्रण करने में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

अनसूया का चरित्र-चित्रण

(2012 EK, EE, EJ, 14 CN CP, 16 TC, TD, TF, TH, 17 ND, NF, 18 BC, BE)

अनसूया शकुन्तला की प्राण-प्यारी सखी है। वह शकुन्तला से हार्दिक प्रेम करती है और उसे प्रसन्न रखने के लिए सतत प्रयत्नशील रहती है। अनसूया के व्यक्तित्व में हमें निम्न विशेषताएँ देखने को मिलती हैं–

(1) गम्भीर स्वभाव—अनसूया गम्भीर स्वभाव की है, उसमें प्रौढ़ता और परिपक्वता अधिक है। ऋषि दुर्वासा के शाप को सुनकर जब प्रियंवदा घबड़ा जाती है, तो अनसूया ही उसे ऋषि दुर्वासा को मनाकर शाप की समाप्ति का उपाय जानने के लिए प्रेरित करती है।

(2) स्वल्पभाषिणी—अनसूया कम बोलती है, हँसी-मजाक की बातों में उसकी विशेष रुचि नहीं है, वह अकेले में स्वयं से अधिक बातें करती है। पर्याप्त ऊहापोह करके ही वह किसी बात का उत्तर देती है।

(3) शङ्कालु प्रकृति—अनसूया शङ्कालु प्रकृति की है, वह सहसा किसी बात पर विश्वास नहीं करती है, दुष्यन्त और शकुन्तला के गान्धर्व विवाह को लेकर उसका मन आशङ्कित है। उसे इस बात की चिन्ता रहती है कि हस्तिनापुर जाकर दुष्यन्त, शकुन्तला को याद भी करेगा कि नहीं– **इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।**

(4) दूरदर्शिनी—अनसूया दूरदर्शिनी है। प्रियंवदा भयभीत है कि ऋषि कण्व शकुन्तला के गान्धर्व विवाह पर कैसी प्रतिक्रिया करेंगे, परन्तु अनसूया उसे आश्वस्त करती है कि ऋषि इसका अनुमोदन करेंगे।

(5) शकुन्तला की शुभचिन्तक—अनसूया शकुन्तला की हितैषिणी है। ऋषि दुर्वासा के शाप से वह बहुत दुःखी हो जाती है और प्रियंवदा से कहती है कि शाप का वृत्तान्त हम दोनों के बीच रहे। वह शकुन्तला की प्रसन्नता के लिए हर समय चिन्तित रहती है। शकुन्तला की विदाई के समय के लिए अनसूया न जाने कब से केसर की माला सँजोकर रखती है।

वस्तुतः कवि कालिदास ने अनसूया का चरित्र शकुन्तला की एक भावुक सखी के रूप में चित्रित किया है जिसके व्यक्तित्व में संवेदना, सहानुभूति, लज्जाशीलता, गम्भीरता एवं बुद्धिमत्ता आदि गुण समाहित हैं।

प्रियंवदा का चरित्र-चित्रण

(2011 HS, HV, HW, 12 EH, 14 CR, 17 NC, ND, NG, 18 BC,BE, BG)

प्रियंवदा नाटक की नायिका शकुन्तला की प्रिय सखी है। वह आयु में शकुन्तला के बराबर है और उसी के समान रूपवती है। वह शकुन्तला की हितैषिणी है और उसे सदैव प्रसन्न देखना चाहती है। उसके चरित्र की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

(1) विनोदशीला–प्रियंवदा विनोदप्रिय स्वभाववाली है। शकुन्तला को केसर वृक्ष के पास खड़ा देखकर वह कहती है, तुम्हारे संयोग से यह वृक्ष ऐसा लग रहा है, जैसे लता का संयोग पा गया हो।

(2) आश्वस्त स्वभाव–प्रियंवदा आश्वस्त स्वभाववाली है। जब अनसूया का मन इस बात से आशङ्कित होता है कि हस्तिनापुर जाकर राजा दुष्यन्त शकुन्तला को याद करेंगे कि नहीं, तब प्रियंवदा उसे आश्वस्त करते हुए कहती है–**''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।''**

(3) वाक्चातुर्य–शकुन्तला को ऋषि दुर्वासा के शाप से मुक्त कराने हेतु वह अपने वाक्चातुर्य से ऋषि दुर्वासा को प्रसन्न करती है और उनसे शाप की समाप्ति का उपाय ज्ञात करती है–

अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति।

(4) शकुन्तला की हितैषिणी–प्रियंवदा शकुन्तला से निःस्वार्थ प्रेम करती है और उसे बहन के समान मानती है। वह शकुन्तला के प्रत्येक मनोरथ को पूर्ण करने के लिए प्रयत्नशील रहती है। ऋषि दुर्वासा से शाप की समाप्ति का उपाय वही ज्ञात करती है। शकुन्तला की विदाई के समय वह सहर्ष गोरोचन, तीर्थमृत्तिका, दूर्वाकिसलय आदि माङ्गलिक अङ्गराग एकत्र करती है और उसे राजा की दी हुई अँगूठी सँभालकर रखने की सलाह देती है—

यदि नान स राजा प्रत्यभिज्ञानमन्थरो भवेत्, ततस्तस्य
इदमात्मनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं दर्शय।

संक्षेप में प्रियंवदा शकुन्तला की परम स्निग्ध सखी है, जो उसके सुख में सुखी और दुःख में दुःखी रहती है। वह व्यावहारिक शिष्टाचार, नम्रता एवं वाक्पटुता में कुशल है।

कण्व (काश्यप) का चरित्र-चित्रण

(2011 HQ, HT, HU, 12 EF, EG, EI, 14 CL, CO, CQ, 16 TC, TD, TI, TG, 17 NC, NI, 18 BC, BD, BG, 20 ZR)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ऋषि कण्व आश्रम के पूज्य कुलपति हैं। उनका दूसरा नाम ऋषि काश्यप भी है। उन्होंने नाटक की नायिका शकुन्तला का पितृ-रूप में लालन-पालन किया था। वे कालदर्शी ऋषि और वात्सल्य से परिपूर्ण पिता हैं। उनके चरित्र का अध्ययन निम्न रूपों में किया जा सकता है–

(1) पुत्री-प्रेम–शकुन्तला ऋषि कण्व की पालिता पुत्री थी, परन्तु उसके लिए उनका पितृ-हृदय स्नेह से कूट-कूटकर भरा था। शकुन्तला की विदाई का विचार आते ही उनका हृदय उत्कण्ठायुक्त हो उठता है, गला रुँध जाता है और दृष्टि चिन्ता से जड़ हो जाती है–

''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया,
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।''

वह स्वयं से पूछते हैं कि मेरा दुःख कैसे दूर हो सकता है–

''शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम्।
उटजद्वारविरूढं नीवारबलिं विलोकयतः॥''

(2) कठोर तपस्वी–ऋषि कण्व का तपोबल अनुपम है, उनका शरीर तपस्या के कारण दुर्बल हो चुका है। शकुन्तला की विदाई के समय अत्यन्त शोकाकुल होते हुए भी उन्हें अपने तपोऽनुष्ठान का ध्यान रहता है और वे उसके अन्तराल को सहन न कर

पाने के कारण शकुन्तला से शीघ्र जाने को कहते हैं–

"वत्से, उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम्।"

(3) सिद्ध पुरुष–ऋषि कण्व सिद्ध पुरुष थे, उन्हें भूत-भविष्य सभी का ज्ञान था। तभी तो यज्ञ के समय आकाशवाणी द्वारा ही उन्हें शकुन्तला के गर्भवती होने की सूचना मिलती है। उनके प्रभाव के कारण ही शकुन्तला की विदाई के समय वृक्ष-वन देवता उसे वस्त्राभूषण आदि प्रसाधन सामग्री प्रदान करते हैं।

(4) लोक-व्यवहार में पारङ्गत–यद्यपि वे ऋषि हैं तथापि लौकिक व्यवहार को भली-भाँति जानते हैं। विदाई के समय शकुन्तला को दिया गया उनका गृहस्थाश्रम-सम्बन्धी उपदेश स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। वे शकुन्तला से कहते हैं–

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भर्त्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्तेवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः॥

(5) उदात्त व्यक्तित्व–ऋषि कण्व दुष्यन्त के साथ सम्पन्न शकुन्तला के गान्धर्व विवाह के औचित्य को जिस सहजता से स्वीकार करते हैं, वह उनके उदात्त व्यक्तित्व का द्योतक है।

वस्तुतः कण्व का जीवन गङ्गा के प्रवाह की भाँति पावन, हिम की भाँति उज्ज्वल, सागर की भाँति विस्तृत और त्रिवेणी की तरह सरल और स्निग्ध है।

दुष्यन्त का चरित्र-चित्रण

(2011 HR, 12 EJ, 16 TH, 17 NC, 18 BD, 19 DE, 20 ZO, ZR)

महाराजा दुष्यन्त हस्तिनापुर के राजा हैं। वह सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट और युवा हैं। उनके सौन्दर्य को देखकर शकुन्तला प्रथम बार में ही आकृष्ट हो जाती है। उनके चरित्र की निम्न प्रमुख विशेषताएँ हैं–

(1) बुद्धिमान्–दुष्यन्त के चरित्र में बुद्धिमत्ता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वह शकुन्तला के रूप से आकृष्ट होने के बाद विवाह करने की तभी सोचता है, जब उसे यह पता चल जाता है कि वह ब्राह्मण की कन्या नहीं है।

(2) मातृभक्त–द्वितीय अङ्क में जब करभक उसकी माता का सन्देश लेकर आता है कि "आज से चौथे दिन मेरे उपवास की पारणा होगी उस समय तुम यहाँ अवश्य उपस्थित रहना" तो वह विवेक से तपस्वियों का भी उल्लंघन नहीं करना चाहता और माता की आज्ञा का पालन भी करना चाहता है।

(3) कलामर्मज्ञ–संगीत और चित्रकला के साथ-साथ दुष्यन्त युद्धकला में भी निपुण है। पञ्चम अङ्क में हंसपदिका की गीति पर उसकी 'अहो, रागपरिवाहिणी गीतिः' यह टिप्पणी उसकी संगीतज्ञता की द्योतक है। वह शकुन्तला का चित्र बनाकर अपनी चित्रकला-पारङ्गतता की सिद्धि करता है। उसकी युद्धकला का पता तब चलता है, जब इन्द्र उसे दानवों से युद्ध करने के लिए स्वर्ग बुलाते हैं।

(4) सहृदय–दुष्यन्त ऋषि-मुनियों का सच्चे मन से सम्मान करनेवाला है। वह आश्रम के मृगों एवं पशु-पक्षियों पर शर-सन्धान नहीं करता है, आश्रम में विनम्र भाव से प्रवेश करता है और आश्रम में किसी प्रकार की विघ्न-बाधा नहीं डालता।

(5) कुशल शासक–वह सफल शासक है, प्रजापालक है, कर्त्तव्यनिष्ठ है, शूरवीर तथा पराक्रमशील है। वह आश्रम में बाधा उपस्थित करनेवालों से आश्रम की सुरक्षा करता है।

(6) सच्चा प्रेमी–राजा दुष्यन्त एक आदर्श प्रेमी है। प्रेम के क्षेत्र में उसका नाम आज भी अमर है। ऋषि शाप से मुक्त होने पर वह अपने परिचय, प्रणय एवं गन्धर्व-विवाह, शकुन्तला एवं उसकी सन्तति सबकी रक्षा करता है तथा अपने वचन का पालन करने का पूरा प्रयास करता है।

(7) नायक–राजा दुष्यन्त अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का नायक है। उसमें नायकत्व सम्बन्धी सभी विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। उसका व्यक्तित्व भी प्रभावशाली है।

महर्षि दुर्वासा का चरित्र-चित्रण

(2011 HU, 12 EI)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में महाकवि कालिदास ने जिन तीन महर्षियों को पात्र के रूप में लिया है, वे हैं—कण्व, दुर्वासा और मारीच। महर्षि दुर्वासा का उपयोग उन्होंने शकुन्तला को शाप देने और फिर शापमुक्त होने का उपाय बताने में किया है। उनके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) क्रोधी– दुर्वासा बहुत क्रोधी हैं। प्रियंवदा उन्हें लौटाकर आश्रम में लाना चाहती है, किन्तु वे नहीं आते। प्रियंवदा उन्हें 'प्रकृतिवक्र' कहती है, वे किसी के अनुनय-विनय पर ध्यान नहीं देते–'प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति।' प्रियंवदा के शब्दों में वे सुलभकोप महर्षि हैं–'एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः।' उनके व्यक्तित्व में कोप अग्नि की तरह है–'कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।' वह जैसे शाप देने के अभ्यस्त हैं। वे इस बात की चिन्ता नहीं करते हैं कि मैं किसे शाप दे रहा हूँ। उन्होंने शकुन्तला को ऐसा कठोर शाप दिया है जिसकी काट उनके ही पास है।

(2) अतिथि– कण्व के अतिथि के रूप में दुर्वासा की उपस्थिति हुई है। उनके 'अयमहं भोः।' वाक्य को अनसूया अतिथि की आवाज के रूप में ही लेती है। – 'सखि! अतिथीनामिव निवेदितम्।' वे अपनी उपेक्षा से शकुन्तला को अतिथि का तिरस्कार करनेवाली ही समझते हैं–'आः, अतिथिपरिभाविनि।' क्योंकि वे अतिथि हैं, अतः पूजा के लिए अर्ह हैं।

(3) अहङ्कारी – दुर्वासा के व्यक्तित्व में अहंकार साफ झलकता है। वे आश्रम में आते ही जिस स्वर में 'अयमहं भोः' कहते हैं, उससे लगता है कि वे अपेक्षा रखते हैं कि इतना कह देने से ही लोग उन्हें पहचान लेंगे। अपने अहंकार की रक्षा के लिए वे शीघ्र क्रोधित हो जाते हैं।

गौतमी का चरित्र-चित्रण

(2011 HQ, 12 EE, 14 CN, 17 NC, 18 BG)

गौतमी अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की महत्त्वपूर्ण पात्र है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1) वात्सल्यमयी– गौतमी में वात्सल्य और भावुकता का स्पष्ट रूप दिखायी देता है। जब शारद्वत आदि उसे आगे कर आश्रम के लिए प्रस्थान करते हैं, तब राजदरबार में शकुन्तला पर उसे तरस आती है और वह शार्ङ्गरव से कहती है–"वत्स शार्ङ्गरव, देखो, रोती हुई शकुन्तला हमारे पीछे-पीछे आ रही है। पति के कठोर हो जाने पर यह करे भी तो क्या करे?"

(2) सामाजिक परम्पराओं की जानकार– गौतमी शब्दशास्त्र की जानकार तो है ही, लोकव्यवहार और शिष्टाचार भी खूब जानती है। जब वनदेवियाँ शकुन्तला के लिए मङ्गलकामना करती हैं, तब वही शकुन्तला को इन्हें प्रणाम करने का निर्देश करती है–"जाते, ज्ञातिजनस्निग्धाभिरनुज्ञातगमनाऽसि तपोवनदेवताभिः। प्रणम भगवतीः।" पाँचवें अङ्क में गौतमी दुष्यन्त को समझाती है कि शकुन्तला का विवाह तुम्हारी सहमति से ही हुआ है। जब राजा दुष्यन्त यह पूछता है क्या मेरा इनसे अर्थात् शकुन्तला से विवाह हुआ है? तब गौतमी ही शकुन्तला का घूँघट हटाकर उसे राजा को दिखाती है, ताकि वह उसे स्वयं देख ले।

(3) सहृदया– गौतमी शकुन्तला की शुभचिन्तक मानी जाती है। शिष्य उसी के हाथों शान्त्युदक भिजवाता है। वही ज्वरग्रस्त शकुन्तला पर दर्भोदक का प्रयोग कर उसे विश्वास दिलाती है कि इससे तुम ठीक हो जाओगी। वह कण्व की आदेशपालिका भी है। कण्व उसे पुकारकर ही कहते हैं कि शकुन्तला को पतिगृह ले जाने के लिए शार्ङ्गरव आदि को आदेश दो।

(4) जिज्ञासु– शकुन्तला की विदाई के समय आशीर्वाद देती तापसियों के साथ वह भी उपस्थित है। उनके चले जाने के पश्चात् गौतम और नारद दो ऋषिकुमार अलङ्कार लेकर उपस्थित होते हैं, जिन्हें देखकर सबके साथ गौतमी भी आश्चर्यचकित हो जाती है और दो प्रश्न करके अपनी जिज्ञासा व्यक्त करती है–'वत्स नारद, कुत एतत्।' 'किं मानसी सिद्धिः।'

विदूषक का चरित्र-चित्रण

(2017 NF)

संस्कृत नाटकों में विदूषक भी एक महत्त्वपूर्ण पात्र होता है। यद्यपि कथावस्तु के संगठन में उसकी विशेष उपयोगिता नहीं होती,

तथापि नायक के प्रेम-तथ्यों में सहायता प्रदान करने तथा दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए विदूषक का होना नितान्त आवश्यक माना जाता है। साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ के अनुसार विदूषक स्वामिभक्त, मनोविनोद में निपुण, कुपित नायिकाओं के मान का भञ्जक एवं सच्चरित्र होता है। उसका नाम कुसुम, वसन्त आदि से सम्बद्ध रहता है और वह अपने विकृत वेश, अटपटे वाक्यों एवं ऊटपटांग कार्यों के द्वारा हास्य का वातावरण प्रस्तुत करता है। वह नायक का विश्वासपात्र होता है। कालिदास के सभी नाटकों में मुख्यतया विनोद का पात्र विदूषक ही होता है। अभिज्ञानशाकुन्तल में विदूषक का नाम माढव्य है। सर्वप्रथम वह द्वितीय अंक में मिलता है। वह अपने प्रथम दर्शन में ही अपनी अकर्मण्यता, भीरुता और भोजनप्रियता का परिचय देता है।

महाकवि कालिदास ने अपने तीनों रूपकों में नायक के सहायक के रूप में विदूषक का प्रयोग किया है। उनके रूपकों में उसकी निजी विशेषता है। सभी नाटकों के विदूषक प्राकृत भाषा में वार्तालाप करते हैं। वे जाति के ब्राह्मण होते हुए भी प्रायः अनपढ़ एवं मूर्ख होते हैं। विदूषक इतना पेटू एवं भोजनप्रिय है कि जब षष्ठ अंक में शकुन्तला के वियोग में व्यथित राजा अपनी अँगूठी को उपालम्भ देता है तो उस गम्भीर अवसर पर भी उसे बुभुक्षा प्रताड़ित करती है–'कथं बुभुक्षया खादितव्योऽस्मि।' राजा दुष्यन्त जब उससे शकुन्तला-विषयक प्रणय-व्यापार में सहायक बनने की इच्छा प्रकट करता है तो विदूषक 'किं मोदकखादिकायाम्' कहकर अपनी पेट पूजा-पटुता का ही प्रकाशन करता है। वह स्वभाव से अत्यन्त भीरु एवं डरपोक है। राक्षसों के भय से वह शकुन्तला को देखने नहीं जाता है। राक्षसों की बात सुनते ही इसके प्राण फड़फड़ाने लगते हैं। राजा के पूछने पर वह भीरु स्वभाव में उत्तर देता है–'प्रथमं सपरीवाहमासीत् साम्प्रतं राक्षसवृत्तान्तेन बिन्दुरपि नावशेषितः।'

विदूषक राजा का वाचाल मित्र है। राजा अपनी गोपनीय बातें भी उससे बतलाता है और अवसर के अनुकूल उससे सहायता लेता है। पंचम अंक में हंसपदिका को सान्त्वना देने के लिए वह विदूषक को ही भेजता है। विदूषक मुँहफट है। किसी के साथ कुछ भी बोलने में यह संकोच नहीं करता है। हँसी में कही हुई इसकी बात का कोई बुरा भी नहीं मानता है। यह ऊपर से बेवकूफ बनता है, किन्तु वास्तव में भीतर से बहुत चतुर है। नाटक के द्वितीय अंक में जब राजा इसके साथ एकान्तवार्ता करने के लिए सभी सेवकों को हटा देता है, तब वह शीघ्र ही राजा के उद्देश्य को समझकर कहता है–'कृतं भवता सम्प्रति निर्मक्षिकम्।' कालिदास का विदूषक हास्यकारी ही नहीं है अपितु वह मनोरंजन के अतिरिक्त अन्य भूमिकाओं का भी निर्वाह अच्छी तरह करता है। इस प्रकार शाकुन्तलम् का विदूषक संस्कृत नाट्य साहित्य में अद्वितीय है। यह विनोदप्रिय है तथा विनोद करने में कुशल है। वह उदरपरायण है, भीरु है, डरपोक है, वाचाल है, सरल स्वभाव का है। फिर भी कालिदास के हाथों में उसका व्यक्तित्व स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आया है। वह 'हास्यकरः विदूषकः' की अपेक्षा कुछ अधिक ही है।

शार्ङ्गरव का चरित्र-चित्रण

(2017 ND, NG)

काश्यप का शिष्य–शार्ङ्गरव काश्यप का शिष्य है। इसकी चर्चा चतुर्थ और पंचम अंक में आई है। शकुन्तला को जो लोग हस्तिनापुर लेकर गये हैं, उनमें शार्ङ्गरव भी एक है। नेपथ्य से कहा गया है–''गौतमि! आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय।''

शकुन्तला में बहिन की बुद्धि–शार्ङ्गरव शकुन्तला में बहिन की बुद्धि रखता है। काश्यप कहते हैं–''भगिन्यास्ते मार्गमादेशय''। यह शकुन्तला को आदर के साथ पुकारता है–'इत इत्यो भवती'।

लोकशास्त्र का ज्ञाता–शार्ङ्गरव को लोक और शास्त्र की परम्पराओं का ज्ञान है। वह जानता है कि स्निग्ध-जन के साथ कहाँ तक जाना चाहिए और विदा होती पुत्री को सन्देश भी देना चाहिए। वह काश्यप से कहता है–''भगवन्! ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीर्थम्। अत्र सन्दिश्य प्रतिगन्तुमर्हमि।''

काश्यप का विश्वासपात्र–शार्ङ्गरव काश्यप का विश्वासपात्र है, इसीलिए वे दुष्यन्त के लिए अपना सन्देश उसके द्वारा ही भेजते हैं–''शार्ङ्गरव! इति त्वया मद्वचनात् स राजा शकुन्तलां पुरस्कृत्य वक्तव्यः।''

वाक्प्रवीण–शार्ङ्गरव की भाषा बड़ी प्रभावी है। सूक्तियाँ फूट-फूटकर निकलती दिखाई देती हैं। 'न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम' या 'औदकान्त स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः' सूक्तियों का वक्ता शार्ङ्गरव ही है।

समय की समझ–शार्ङ्गरव समय का बहुत ध्यान रखता है। वही शकुन्तला को सूचित करता है कि सूर्य दूसरे पहर में आ गया है अतः शीघ्र चलना चाहिए–''युगान्तरमारूढ़ः सविता। त्वरतामत्र भवती।''

संक्षेप में छोटा पात्र होने पर भी शार्ङ्गरव एक बहुमुखी चरित्र का धनी है।

शारद्वत का चरित्र-चित्रण

(2017 ND)

काश्यप का शिष्य–काश्यप कण्व के शिष्यों में एक शारद्वत भी है। अभिज्ञानशाकुन्तल के चौथे और पाँचवें अंक में इसकी चर्चा आती है। गौतमी और शार्ङ्गरव के साथ शारद्वत भी शकुन्तला को लेकर हस्तिनापुर गया था। प्रियंवदा की उक्ति है–''एते खलु हस्तिनापुरगामिनः ऋषयः शब्दाय्यन्ते।''

शार्ङ्गरव का साथी–वस्तुतः चतुर्थ अंक में शारद्वत का स्पष्ट उल्लेख नहीं हुआ है, किन्तु पंचम अंक से पता चलता है कि शार्ङ्गरव के साथ वह भी हस्तिनापुर गया था। वह भी शार्ङ्गरव के समान एक मुनि है–'ततः प्रविशन्ति गौतमीसहिताः शकुन्तलां पुरस्कृत्य मुनयः'। राजदरबार में पहुँचकर शार्ङ्गरव शारद्वत से ही अपनी बात कहता है–''शारद्वत! जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव।''

एकान्तप्रिय–शारद्वत नित्य ही तपोवन में रहने का अभ्यासी है, इसीलिए उसे हस्तिनापुर में प्रवेश करना अटपटा सा लगता है। वह कहता है–

अभ्यक्तमिव स्नातः शुचिरशुचिमिव प्रबुद्ध इव सुप्तम्।
बद्धमिव स्वैरगतिर्जनमिह सुखसङ्गिनमवैमि॥

तर्कशील–शारद्वत विवेकी मुनि है। जब राजा दुष्यन्त शकुन्तला को स्वीकार नहीं करता, तब शार्ङ्गरव उसे तरह-तरह से समझाता है किन्तु उसके तर्क व्यर्थ जाते हैं। ऐसे समय शारद्वत की न्यायिक एवं सतर्क सूझ-बूझ काम करती है। वह कहता है–''शार्ङ्गरव! विरमत्वमिदानीम्। शकुन्तले! वक्तव्यमुक्तमस्माभिः। सोऽयमत्रभवानेवमाह। दीयतामस्मै प्रत्ययप्रतिवचनम्।''

कर्मज्ञ–शारद्वत परिस्थितियों को सँभालने का प्रयास करता है। राजसभा में उत्तरप्रत्युत्तर बढ़ता देखकर वह अपना निर्णय सुनाता है, अब उत्तर-प्रत्युत्तर का कोई लाभ नहीं। वह शार्ङ्गरव से कहता है कि हमने गुरुजी के आदेश का पालन कर लिया है। अब हम लौटते हैं। वह राजा से भी कहता है–

तदेखा भवतः कान्ता त्यज वैनां गृहाण वा।
उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी॥

संक्षेप में शारद्वत शार्ङ्गरव की अपेक्षा अधिक सुलझा हुआ, मितभाषी और विवेकशील है।

महाकविकालिदासविरचितम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

चतुर्थोऽङ्कः (आकाशे) रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः .... इत्यादि)

अन्वय, शब्दार्थ एवं व्याख्या

(आकाशे)

रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभि-
श्छायाद्रुमैर्नियमितार्कमयूखतापः।
भूयात् कुशेशयरजोमृदुरेणुरस्याः
शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः॥11॥

(2010 BY, 12 EG, EI, 13 BI, 14 CR, 16 TF, 18 BD,BE, 20 ZT)

(सर्वे सविस्मयमाकर्णयन्ति।)

(आकाश में)

इसका मार्ग कमल-लताओं से हरे-भरे, तालाबों से मनोहर मध्य भागवाला, छायादार वृक्षों से कम किये गये सूर्य की किरणों के तापवाला, कमलों के पराग से कोमल धूलिवाला तथा शान्त और अनुकूल वायु से युक्त एवं कल्याणमय हो।।11।।

(सभी लोग आश्चर्य के साथ सुनते हैं।)

अन्वय– अस्याः, पन्थाः, कमलिनीहरितैः, सरोभिः, रम्यान्तरः; छायाद्रुमैः, नियमितार्कमयूखतापः, कुशेशयरजोमृदुरेणुः, च, शान्तानुकूलपवनः, च, शिवः, भूयात्।।11।।

शब्दार्थ– अस्याः = इस (शकुन्तला) का, पन्थाः = मार्ग, कमलिनीहरितैः = कमललताओं से हरे-भरे, सरोभिः = तालाबों से, रम्यान्तरः = मनोहर मध्यवाला (हो), छायाद्रुमैः = छायादार वृक्षों से, नियमितार्कमयूखतापः = कम किया गया सूर्य की किरणों के तापवाला (हो), कुशेशरजोमृदुरेणुः = कमलों के पराग से कोमल धूलिवाला, च = तथा, शान्तानुकूल पवनः = शान्त और अनुकूल वायु से युक्त, च = एवम्, शिवः = कल्याणमय, भूयात् = हो।।11।।

विशेष– कुशेशयरजोमृदुरेणुः– इसके दो अर्थ बतलाये गये हैं–(क) कमलों के पराग से कोमल धूलिवाला और (ख) कमलों के पराग के तुल्य कोमल धूलिवाला। इसका आशय यह है कि मार्ग में कमलों से भरपूर तालाब मिलें तथा हवा से उड़ाया हुआ उनका पराग इतना अधिक हो कि मार्ग की धूल कोमल हो जाय।

परिकर एवं तुल्ययोगिता अलङ्कार, वसन्ततिलका छन्द।

गौतमी - जाते, ज्ञातिजनस्निग्धाभिरनुज्ञातगमनाऽसि तपोवनदेवताभिः। प्रणम भगवतीः।

शकुन्तला - (सप्रणामं परिक्रम्य। जनान्तिकम्) हला प्रियंवदे, आर्यपुत्रदर्शनोत्सुकाया अप्याश्रमपदं परित्यजन्त्या दुःखेन मे चरणौ पुरतः प्रवर्तेते।

प्रियंवदा - न केवलं तपोवनविरहकातरा सख्येव। त्वयोपस्थितवियोगस्य तपोवनस्यापि तावत् समवस्था दृश्यते।

गौतमी– पुत्री, बान्धवजनों की स्त्रियों की तरह स्नेह करनेवाली तपोवन की देवियों के द्वारा तुझे जाने की अनुमति मिल गयी है। (तो) पूज्य इन देवियों को प्रणाम करो।

शकुन्तला - (प्रणाम करती हुई चारों ओर घूमकर, हाथ से ओट करके दूसरी ओर) सखि प्रियंवदा, आर्यपुत्र (पतिदेव) के दर्शन के लिए उत्कण्ठा होने पर भी आश्रम-भूमि को छोड़ते हुए मेरे पैर दुःख के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

प्रियंवदा– न केवल तू ही तपोवन के वियोग से दुःखी है, तुम्हारी विदाई का समय उपस्थित होने के कारण तपोवन की भी तुम्हारे समान अवस्था दिखलायी पड़ रही है।

शब्दार्थ– ज्ञातिजनस्निग्धाभिः = बान्धवजनों की स्त्रियों की तरह स्नेह करनेवाली, तपोवनदेवताभिः = तपोवन की देवियों के द्वारा, आर्यपुत्रदर्शनोत्सुकायाः = आर्यपुत्र (पतिदेव) के दर्शन के लिए उत्कण्ठित, पुरतः = आगे की ओर, तपोवनविरहकातरा = तपोवन के विरह से दुःखी, समवस्था = समान ही अवस्था, दृश्यते = दिखलायी पड़ रही है।

उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः ॥12॥

(हिन्दी अनुवाद– 2012 EH, 13 BE, 16 TH, 17 ND, 19 DC, DD, 20 ZQ)

हरिणियों ने कुश के ग्रास को उगल दिया है; मयूरों ने नाचना छोड़ दिया है; लताओं ने पीले पत्तों को गिराया है; (इस प्रकार ये) मानो आँसुओं को गिरा रही हैं।।12।।

अन्वय–मृग्यः, उद्गलितदर्भकवलाः, मयूराः, परित्यक्तनर्तनाः, लताः, अपसृतपाण्डुपत्राः, (इत्थम् एताः) अश्रूणि, मुञ्चन्ति, इव।

शब्दार्थ– मृग्यः = हरिणियों ने, उद्गलितदर्भकवलाः = कुश के ग्रास को उगल दिया है, मयूराः = मयूरों ने, परित्यक्तनर्तनाः = नाचना छोड़ दिया है, लताः = लताओं ने, अपसृतपाण्डुपत्राः = पीले पत्तों को गिराया है, (इत्थम् = इस प्रकार, एताः = ये), अश्रूणि = आँसुओं को, मुञ्चन्ति = छोड़ रही हैं, इव = मानो।।12।।

उत्प्रेक्षा, समासोक्ति अलङ्कार, आर्या छन्द।

शकुन्तला– (स्मृत्वा) तात, लताभगिनीं वनज्योत्स्नां तावदामन्त्रयिष्ये।

काश्यपः– अवैमि ते तस्यां सोदर्यास्नेहम्। इयं तावद् दक्षिणेन।

शकुन्तला– (उपेत्य लतामालिङ्ग्य) वनज्योत्स्ने, चूतसंगताऽपि मां प्रत्यालिङ्गेतोगताभिः शाखाबाहुभिः। अद्यप्रभृति दूरपरिवर्तिनी ते खलु भविष्यामि।

शकुन्तला– (स्मरण करके) पिता जी, अब लता-बहन वनज्योत्स्ना से विदाई लूँगी।

काश्यप– मैं जानता हूँ, उस पर तुम्हारा सगी बहन का-सा प्रेम है। तो यह (वनज्योत्स्ना) दाहिनी ओर है।

शकुन्तला– (पास में जाकर तथा लता का आलिङ्गन करके) हे वनज्योत्स्ना, आम से लिपटी हुई भी तुम इधर फैली हुई शाखारूपी बाहुओं से मेरा आलिङ्गन करो। आज से मैं तुमसे दूर हो जाऊँगी।

शब्दार्थ– स्मृत्वा = स्मरण करके, आमन्त्रयिष्ये = विदाई लूँगी, सोदर्यास्नेहम् = सगी बहन का=सा प्रेम, दक्षिणेन = दाहिनी ओर, उपेत्य = पास में जाकर, चूतसङ्गता = आम से लिपटी हुई, इतोगताभिः = इधर फैली हुई, शाखाबाहुभिः = शाखारूपी बाहुओं से, अद्यप्रभृति = आज से, दूरपरिवर्तिनी = दूर स्थित।

काश्यपः –

सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे
भर्तारमात्मसदृशं सुकृतैर्गता त्वम्।
चूतेन संश्रितवती नवमालिकेय-
मस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः॥13॥ (2013 BH, 17 NC, 18 BC, 19 DB, 20 ZS)

इतः पन्थानं प्रतिपद्यस्व।

काश्यप– मेरे द्वारा तुम्हारे लिये पहले से ही सोचे गये अपने सदृश पति को तुम भाग्य से पा गयी हो। यह नवमालिका भी

आम्र वृक्ष से मिल गयी है। इस समय मैं इसके और तुम्हारे विषय में चिन्ता से मुक्त हो गया हूँ।।13।।

यहाँ से प्रस्थान करो।

अन्वय–मया, तवार्थे, प्रथमम्, एव, सङ्कल्पितम्, आत्मसदृशम्, भर्तारम्, त्वम्, सुकृतैः, गता, इयम्, नवमालिका, चूतेन, संश्रितवती, सम्प्रति, अहम्, अस्याम्, च, त्वयि, वीतचिन्तः।।13।।

शब्दार्थ– मया = मेरे द्वारा, तवार्थे = तुम्हारे लिये, प्रथमम् = पहले से, एव= ही, सङ्कल्पितम् = सोचे गये, आत्मसदृशम् = अपने सदृश, भर्तारम् = पति को, त्वम् = तुम, सुकृतैः = भाग्य से, गता= पा गयी हो, इयम् = यह, नवमालिका = नेवारी, चूतेन = आम्रवृक्ष से, संश्रितवती = मिल गयी है, सम्प्रति = इस समय, अहम् = मैं, अस्याम् = इसके विषय में, च = और, त्वयि = तुम्हारे विषय में, वीतचिन्तः = चिन्ता से मुक्त हो गया हूँ।।13।।

समासोक्ति तुल्ययोगिता, काव्यलिङ्ग अलङ्कार। वसन्ततिलका छन्द।

विशेष– सङ्कल्पितम् - शकुन्तला अपने जमाने की अनुपम सुन्दरी थी। नव यौवन ने उसके सौन्दर्य को और बढ़ा दिया है। कण्व ने उसके सौन्दर्य को स्नेहिल नेत्रों से देखकर सोचा - 'इसे इसके योग्य व्यक्ति को दूँगा।' आज उन्हें विदित हुआ है कि शकुन्तला ने दुष्यन्त के साथ गान्धर्व विवाह कर लिया है। अब वे निश्चिन्त हो गये हैं, क्योंकि दुष्यन्त योग्य व्यक्तियों में प्रथम है।

शकुन्तला – (सख्यौ प्रति) हला, एषा द्वयोर्युवयोर्हस्ते निक्षेपः।

सख्यौ – अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः। (इति बाष्पं विहरतः।)

काश्यपः – अनसूये, अलं रुदित्वा। ननु भवतीभ्यामेव स्थरीकर्त्तव्या शकुन्तला। (सर्वे परिक्रामन्ति।)

शकुन्तला – तात, एषोटजपर्यन्तचारिणी गर्भमन्थरा मृगवधूर्यदाऽनघप्रसवा भवति, तदा मह्यं कमपि प्रियनिवेदयितृकं विसर्जयिष्यथ। (2013 BC, 14 CQ)

काश्यपः – नेदं विस्मरिष्यामः।

शकुन्तला – (गतिभङ्गं रूपयित्वा) को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते। (इति परावर्तते।)

शकुन्तला– (दोनों सखियों से) सखियों! यह (लता) तुम दोनों के हाथ में (मेरी) धरोहर है।

दोनों सखियाँ– यह जन किसके हाथ में समर्पित किया गया है? (हम दोनों को किसके हाथ में सौंप रही हो। (ऐसा कहकर दोनों आँसू बहाती हैं।)

काश्यप – अनसूया, रोओ मत। अरे, आप दोनों को ही शकुन्तला को ढाँढ़स बँधाना चाहिए। (सभी चारों ओर घूमते हैं।)

शकुन्तला– पिता जी, कुटी के पास विचरण करनेवाली, गर्भ के भार के कारण धीमी गतिवाली यह हरिणी जब निर्विघ्न रूप से बच्चा पैदा करेगी, तब इस शुभ समाचार की सूचना देनेवाले किसी व्यक्ति को मेरे पास भेजियेगा।

काश्यप– (हम) यह नहीं भूलेंगे।

शकुन्तला– (गति में बाधा का अभिनय करके) अरे, यह कौन मेरे वस्त्र में लिपट रहा है? (ऐसा कहकर पीछे की ओर मुड़ती है।)

शब्दार्थ– निक्षेपः = धरोहर, ट्रस्ट, समर्पितः = समर्पित किया गया। विहरतः = बहाती है, उटजपर्यन्तचारिणी = कुटी के पास विचरण करनेवाली, गर्भमन्थरा = गर्भ के भार के कारण धीमी गतिवाली, मृगवधूः = हरिणी, अनघप्रसवा = निर्विघ्न बच्चा पैदा की हुई, प्रियनिवेदयितृकम् = शुभ समाचार की सूचना देनेवाले को, गतिभङ्गम् = गति में बाधा का, रूपयित्वा = अभिनय करके, निवसने = वस्त्र में, सज्जते = लिपट रहा है।

विशेष– निक्षेपः – धरोहर को 'निक्षेप' कहा जाता है। जब कोई व्यक्ति अपने स्थान से बाहर जाने लगता है, तो वह अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को किसी विश्वस्त प्रिय व्यक्ति के पास सुरक्षा के लिए, तब तक के लिए, रख देता है, जब तक कि वह वापस न आ जाय। धरोहर जिस रूप में रखी जाती है, उसी रूप में वह लौटायी जाती है।

काश्यपः - वत्से,

यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनां

तैलं न्यषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे।
श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति
सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते॥14॥

(2011 HV, 12 EF, 13 BF, 16 TI, 17 NF, NG, NH, 18 BG, 19 DA)

काश्यप - पुत्री,

जिसके कुशों की नोक से बिंधे हुए मुख में तुम्हारे द्वारा घाव को भरनेवाला इङ्गुदी (हिंगोट) का तेल लगाया गया था, वही यह साँवाँ की मुट्ठियों को खिलाकर बड़ा किया गया तथा पुत्र की तरह माना गया हरिण तुम्हारे मार्ग को नहीं छोड़ रहा है।।14।।

अन्वय–यस्य, कुशसूचिविद्धे, मुखे, त्वया, व्रणविरोपणम्, इङ्गुदीनाम्, तैलम्, न्यषिच्यत, सः, अयम्, श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितकः, पुत्रकृतकः, मृगः, ते, पदवीम्, न, जहाति।।14।।

शब्दार्थ– यस्य = जिसके, कुशसूचिविद्धे = कुशों की नोंक से बिंधे हुए, मुखे = मुख में, त्वया = तुम्हारे द्वारा, व्रणविरोपणम् = घाव को भरनेवाला, इङ्गुदीनाम् = इङ्गुदी का, तैलम् = तेल, न्यषिच्यत = लगाया गया था; सः = वही, अयम् = यह, श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितकः = साँवाँ की मुट्ठियों (को खिलाकर) बड़ा किया गया, पुत्रकृतकः = पुत्र की तरह माना गया, मृगः = हरिण, ते = तुम्हारे, पदवीम् = मार्ग को, न = नहीं, जहाति = छोड़ रहा है।

विशेष– व्रणविरोपणम् - लोकभाषा में इङ्गुदी को 'एँगुआ' या हिंगोट कहते हैं। यह महीन पत्तों का काँटेदार मध्यम कद का वृक्ष होता है। इसके फलों को तोड़कर बीज निकाला जाता है। पहले लोग इन्हीं बीजों को पीसकर तेल निकालते थे। इसका तेल घावों के लिए अत्यन्त लाभकारी होता है।

श्यामाक- इसे सामान्य बोलचाल की भाषा में साँवाँ कहते हैं।

स्वभावोक्ति अलङ्कार। वसन्ततिलका छन्द।

शकुन्तला - वत्स, किं सहवासपरित्यागिनीं मामनुसरसि। अचिरप्रसूतया जनन्या बिना वर्धित एव। इदानीमपि मया विरहितं त्वां तातश्चिन्तयिष्यति। निवर्तस्व तावत् (इति रुदती प्रस्थिता।) (2017 NI)

शकुन्तला– पुत्र, मेरे साथ को छोड़कर जानेवाली का पीछा क्यों कर रहे हो? प्रसव करके तत्काल मरी हुई माता के बिना (भी) तुम पाले ही गये हो। अब भी मेरे द्वारा छोड़े गये तुम्हें पिता जी पालेंगे ही। तो लौट जाओ। (ऐसा कहकर रोती हुई प्रस्थान करती है।)

शब्दार्थः – वत्स = बेटा, सहवासपरित्यागिनीम् = साथ को छोड़कर जानेवाला, अचिरप्रसूतया = तत्काल प्रसव की हुई, विरहितम् = रहित, चिन्तयिष्यति = चिन्ता करेंगे, पालेंगे, रुदती = रोती हुई।

विशेष– अचिरप्रसूता – जिस मृग को उद्देश्य करके शकुन्तला यह बात कह रही है, उसकी माँ उसे पैदा करते ही मर गयी थी। शकुन्तला ने उसे मुट्ठी-मुट्ठी साँवाँ आदि खिलाकर पाला था। उसे स्वल्प भी कष्ट नहीं होने पाया था। इसी बात की ओर यहाँ संकेत है।

काश्यपः –

उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरुपरुद्धवृत्तिं
बाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबन्धम्।
अस्मिन्नलक्षितनतोन्नतभूमिभागे
मार्गे पदानि खलु ते विषमीभवन्ति॥15॥

काश्यप– ऊपर उठी हुई बरौनियों से युक्त नेत्रों के व्यापार (देखने की शक्ति) को रोकनेवाले आँसू को धैर्यपूर्वक रोको, क्योंकि नहीं दिखलायी पड़ रहे ऊँचे-नीचे भू-भागवाले इस मार्ग में, तुम्हारे पैर लड़खड़ा रहे हैं।।15।।

अन्वय–उत्पक्ष्मणोः, नयनयोः, उपरुद्धवृत्तिम्, बाष्पम्, स्थिरतया, विरतानुबन्धम्, कुरु, खलु, अलक्षितनतोन्नतभूमिभागे, अस्मिन्, मार्गे, ते, पदानि, विषमीभवन्ति।।15।।

शब्दार्थ – उत्पक्ष्मणोः = ऊपर उठी हुई बरौनियों से युक्त, नयनयोः = नेत्रों के, उपरुद्धवृत्तिम् = व्यापार को अवरुद्ध करनेवाले, वाष्पम् = आँसू को, स्थिरतया = धैर्यपूर्वक, विरतानुबन्धम् = विरत प्रवाहवाला, अवरुद्ध, कुरु = करो, खलु = क्योंकि, अलक्षितनतोन्नतभूमिभागे = नहीं दिखलायी पड़ रहा है ऊँचा-नीचा भू-भाग जिसमें ऐसे, न दिखलायी पड़ रहे ऊँचे - नीचे भू -भागवाले, अस्मिन् = इस, मार्गे = मार्ग में, ते = तुम्हारे, पदानि = पैर, विषमीभवन्ति = लड़खड़ा रहे हैं, ऊँचे=नीचे हो रहे हैं।।15।।

विशेष – उत्पक्ष्मणोः – आँखों की शोभा का प्राण हैं बड़ी-बड़ी ऊपर उठी हुई बरौनियाँ। सर्वाङ्गसुन्दरी शकुन्तला की आँखें ऊपर उठी हुई बड़ी-बड़ी बरौनियों से अलङ्कृत हैं।

अलक्षित0 - ठीक से बिना देखे चलने के कारण पैर लड़खड़ा रहे थे। यही कारण है कि कण्व आँखों को साफ करके ठीक से देखकर चलने की सलाह दे रहे हैं। यात्रा के समय पैरों का लड़खड़ाना शुभ नहीं माना जाता।

काव्यलिङ्ग अलङ्कार, वसन्ततिलका छन्द।

शार्ङ्गरवः – भगवन्, ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम्। अत्र संदिश्य प्रतिगन्तुमर्हति।

काश्यपः – तेन हीमां क्षीरवृक्षच्छायामाश्रयामः।

(सर्वे परिक्रम्य स्थिताः।)

काश्यपः– (आत्मगतम्) किं नु खलु तत्रभवतो दुष्यन्तस्य युक्तरूपमस्माभिः संदेष्टव्यम्। (इति चिन्तयति।)

शकुन्तला –(जनान्तिकम्) हला, पश्य। नलिनीपत्रान्तरितमपि सहचरमपश्यन्त्यातुरा चक्रवाक्यारटति, दुष्करमहं करोमीति।

शार्ङ्गरव – भगवन् (यात्रा के समय) जलाशय तक प्रिय व्यक्ति के साथ जाना चाहिए- ऐसा सुना जाता है। तो यह सरोवर का तट है। यहाँ (हमें अपना) सन्देश देकर आप लौट सकते हैं।

काश्यप – तो हम सब इस वट वृक्ष की छाया में एकत्रित हो जायँ।

(सभी लोग घूमकर खड़े हो जाते हैं।)

काश्यप – (अपने-आप) आदरणीय दुष्यन्त के योग्य हमें क्या सन्देश भेजना चाहिए। (इस प्रकार सोचने लगते हैं।)

शकुन्तला– (हाथ से आड़ करके दूसरी ओर) सखि, देखो। कमल-लता के पत्ते की आड़ में स्थित भी अपने साथी को न देख सकने से दुःखी चकवी चिल्ला रही है– 'मैं दुष्कर कार्य कर रही हूँ' – ऐसा मेरा अनुमान है।

शब्दार्थ– ओदकान्तम् = जलाशय तक, स्निग्धः = प्रिय व्यक्ति, अनुगन्तव्यः = अनुगमन करना चाहिए, पहुँचाना चाहिए, सरस्तीरम् = सरोवर का तट है, संदिश्य = सन्देश देकर, प्रतिगन्तुम् = लौटने में, अर्हति = योग्य हैं, क्षीरवृक्षच्छायाम् = दुधारू वृक्ष की छाया का, वट वृक्ष की छाया का, आत्मगतम् = अपने-आप, युक्तरूपम् = अनुरूप, अनुकूल, योग्य, नलिनीपत्रान्तरितम् = कमल-लता के पत्ते की आड़ में स्थित, सहचरम् = साथी को, वस्तुतः जीवनसाथी को, आतुरा = दुःखी, आरटति = चिल्ला रही है।

विशेष– ओदकान्तम्– स्मृतियों के अनुसार जब कोई अपना व्यक्ति बाहर जाने लगे तो घर के लोगों को चाहिए कि वे जलाशय अथवा किसी दुधारू वृक्ष तक उसे पहुँचावें। यहाँ संयोग से दोनों ही उपस्थित हैं। आश्रम के व्यक्तियों को लौटने की सलाह दी जा रही है।

दुष्करम्– चकई और चकवा साथ-साथ विहार कर रहे थे। कमल के पत्तों से चकवा थोड़ी देर के लिए छिप गया। चकई विह्वल होकर चिल्लाने लगी। शकुन्तला का अनुमान है कि वह चिल्ला-चिल्लाकर यही कह रही है कि ''प्रियतम से कुछ क्षणों के लिए बिछुड़कर जो मैं जीवित हूँ, वही बड़ा कठिन कार्य कर रही हूँ।'' इस कथन से शकुन्तला का सङ्केत अपनी ओर भी है कि ''मैं भी पति के वियोग में कठिनाई से जी रही हूँ।''

अनसूया - सखि, मैवं मन्त्रयस्व।

एषापि प्रियेण विना गमयति रजनीं विषाददीर्घतराम्।
गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति ॥16॥ (2020 ZP, ZT)

अनसूया—सखि, ऐसा मत कहो।

यह (चक्रवाकी) भी प्रिय के बिना दुःख के कारण विशाल रात्रि को व्यतीत करती है; (क्योंकि) आशा का बन्धन महान् वियोग के कष्ट को भी सहन करवाता है।।16।।

अन्वय—एषा, अपि, प्रियेण, विना, विषाददीर्घतराम्, रजनीम्, गमयति, आशाबन्धः, गुरु, अपि, विरहदुःखम् साहयति।।16।।

शब्दार्थ— एषा = यह, अपि = भी, प्रियेण = प्रिय के, विना = बिना, विषाददीर्घतराम् = दुःख के कारण विशाल (प्रतीत होनेवाली), रजनीम् = रात्रि को, गमयति = व्यतीत करती है, आशाबन्धः = आशा का बन्धन, गुरु = महान्, अपि = भी, विरहदुःखम् = वियोग के कष्ट को, सहयति = सहन करवाता है।।16।।

विशेष—विषाददीर्घतराम् — दुःख की अवस्था में रात्रि व्यतीत ही नहीं होती। सुरसा के मुख की भाँति वह बढ़ती ही जाती है।

आशाबन्धः— आशा बड़ी प्रबल होती है। इसके कारण व्यक्ति महान्-से-महान् कष्ट भी सहन कर लेता है।

अर्थान्तरन्यास अलङ्कार, आर्या छन्द।

काश्यपः— शार्ङ्गरव, इति त्वया मद्वचनात् स राजा शकुन्तलां पुरस्कृत्य वक्तव्यः।

शार्ङ्गरवः— आज्ञापयतु भवान्।

काश्यपः —

अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मन-
स्त्वय्यस्याः कथमप्यबान्धवकृतां स्नेहप्रवृत्तिं च ताम्।
सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया
भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद् वाच्यं वधूबन्धुभिः॥17॥ (2011 HU, 18 BD, 19 DC, 20 ZR)

काश्यप—शार्ङ्गरव, तुम शकुन्तला को आगे करके मेरी ओर से राजा से इस प्रकार कहना।

शार्ङ्गरव—आप आज्ञा दें। (कि क्या कहना है)

काश्यप—संयमरूपी धनवाले हम लोगों को तथा अपने ऊँचे कुल को और तुम्हारे ऊपर इस (शकुन्तला) के, किसी भी रूप में बन्धुओं के द्वारा न कराये गये, उस प्रेम-व्यापार को भी भली-भाँति विचारकर तुम्हारे द्वारा यह (शकुन्तला) स्त्रियों के मध्य समान गौरवपूर्वक देखी जानी चाहिए। इससे अधिक भाग्य के अधीन है, वह वस्तुतः वधू के भाई-बन्धुओं को नहीं कहना चाहिए।

शब्दार्थ—मद्वचनात् = मेरी ओर से, शकुन्तलां पुरस्कृत्य = शकुन्तला को आगे करके।

अन्वय—संयमधनान्, अस्मान्, च, आत्मनः, उच्चैः, कुलम्, त्वयि, अस्याः, कथमपि, अबान्धवकृताम्, ताम्, स्नेहप्रवृत्तिम्, च, साधु, विचिन्त्य, त्वया इयम्, दारेषु, सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकम्, दृश्या; अतः, परम्, भाग्यायत्तम्, तत्, खलु, वधूबन्धुभिः, न, वाच्यम्।।17।।

शब्दार्थ— संयमधनान् = संयमरूपी धनवाले, अस्मान् = हम लोगों को, च = तथा, आत्मनः = अपने, उच्चैः = ऊँचे, कुलम् = कुल को, त्वयि = तुम्हारे ऊपर, अस्याः = इस (शकुन्तला) के, कथमपि = किसी भी रूप में, अबान्धवकृताम् = बन्धुओं के द्वारा न किये गये, ताम् = उस, स्नेहप्रवृत्तिम् = प्रेम-व्यापार को, च = और, साधु = भली-भाँति, विचिन्त्य = विचारकर, त्वया = तुम्हारे द्वारा, इयम् = यह (शकुन्तला), दारेषु = स्त्रियों में, सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकम् = समान गौरव के साथ, एक समान सम्मानपूर्वक, दृश्या = देखी जानी चाहिए, समझी जानी चाहिए, अतः = इससे, परम् = अधिक, भाग्यायत्तम् = भाग्य के अधीन है, तत् = वह, खलु = वस्तुतः, वधूबन्धुभिः = वधू के भाई-बन्धुओं को, न = नहीं, वाच्यम् = कहना चाहिए।

विशेष–संयमधनान्– संयम-इन्द्रिय-निग्रह ही हम लोगों का धन है, अतः पुत्री की विदाई के अवसर पर हम भौतिक सम्पत्ति को देने में असमर्थ हैं।

उच्चैः कुलम्– अपने विश्व-विश्रुत कुल को यादकर ऐसा कार्य करना, जिससे शकुन्तला को किसी भी प्रकार का कष्ट न होने पाये, किसी तरह की अपकीर्ति न होने पाये।

स्नेहप्रवृत्तिम्– आपको यह स्मरणकर शकुन्तला पर अधिक ध्यान देना चाहिए कि मुझे इसने स्वयं, बिना दूसरे की प्रेरणा के ही, प्रेम किया है और मैंने भी इसे अपना प्रेम प्रदान किया है।

भाग्यायत्तम्–इससे आगे तो भाग्य के अधीन है कि वह कहाँ तक सफलता की श्रेणी पर पहुँचती है। उसके विषय में हम नहीं कहेंगे, क्योंकि हम कन्यापक्ष के हैं, अतः हमारा कहना पक्षपातपूर्ण समझा जायगा। तुम इस पर स्वयं विचारकर व्यवहार करना कि कन्या के सम्बन्धी उसकी सुख-शान्ति के लिए कैसा विचार रखते हैं।

अप्रस्तुत प्रशंसा अलङ्कार। शार्दूलविक्रीडित छन्द।

शार्ङ्गरवः – गृहीतः सन्देशः।

काश्यपः – वत्से, त्वमिदानीमनुशासनीयाऽसि। वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्।

शार्ङ्गरवः – न खुल धीमतां कश्चिदविषयो नाम।

शार्ङ्गरव– (आपका) सन्देश ग्रहण कर लिया गया (अर्थात् मैंने आपका सन्देश समझ लिया)।

काश्यप–बेटी, तुम अब शिक्षणीय हो (अर्थात् अब तुम्हें भी कुछ शिक्षा देनी है)। वनवासी होकर भी हम लोग लोक-व्यवहार को जाननेवाले हैं।

शार्ङ्गरव–वस्तुतः बुद्धिशालियों के लिए कुछ भी अज्ञात नहीं होता है।

शब्दार्थ– गृहीतः = ग्रहण कर लिया गया, समझ लिया गया। अनुशासनीया = शिक्षणीय हो, वनौकसः = वनवासी, लौकिकज्ञाः = लोक-व्यवहार को जाननेवाले, धीमताम् = बुद्धिशालियों के लिए, अविषयः = अज्ञात, अपरिचित।

विशेष– लौकिकज्ञाः– लोक-व्यवहार को जाननेवाले। कण्व के कहने का भाव यह है कि यद्यपि हम लोगों का जीवन वन में ही व्यतीत हो रहा है, फिर भी हम लोक-प्रचलित व्यवहारों को जानते हैं, अतः तुम्हारे लिये मेरे उपदेश निरर्थक न होकर सार्थक ही हैं।

काश्यपः – सा त्वमितः पतिकुलं प्राप्य –

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भर्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः॥18॥

(2011 HR, 12 EJ, 14 CQ, 17 NI, 19 CZ, 20 ZO)

कथं वा गौतमी मन्यते।

काश्यप–तुम यहाँ से पतिगृह पहुँचकर–

गुरुजनों की सेवा करना, पत्नियों के साथ प्रिय सखी का-सा व्यवहार करना, तिरस्कृत होकर भी क्रोधवश पति के विपरीत आचरण मत करना, सेवक-सेविकाओं पर पर्याप्त उदार रहना, भाग्य पर अभिमान मत करना, ऐसा व्यवहार करनेवाली युवतियाँ गृहलक्ष्मी के पद को प्राप्त करती हैं और इसके विपरीत आचरण करनेवाली (युवतियाँ) कुल के लिए दुःख का कारण बनती हैं।।18।।

अथवा गौतमी क्या मानती हैं?

अन्वय–गुरून्, शुश्रूषस्व, सपत्नीजने, प्रियसखीवृत्तिम्, कुरु, विप्रकृता, अपि, (त्वम्), रोषणतया, भर्तुः, प्रतीपम्, मा स्म गमः, परिजने, भूयिष्ठम्, दक्षिणा, भव; भाग्येषु, अनुत्सेकिनी, (भव), एवम्, युवतयः गृहिणीपदम्, यान्ति, वामाः, कुलस्य, आधयः, (भवन्ति)।।18।।

शब्दार्थ– गुरून् = गुरुजनों की, आदरणीय जनों की, शुश्रूषस्व = सेवा करना, सपत्नीजने = सपत्नियों के साथ, सौतों के साथ, प्रियसखीवृत्तिम् = प्रिय सखी का-सा बर्ताव, कुरु = करना, विप्रकृता = तिरस्कृत होकर, अपि = भी, (त्वम् = तुम), रोषणतया = क्रोधवश, भर्तुः = स्वामी के, पति के, प्रतीपम् = विपरीत, मा स्म गमः = मत जाना, आचरण मत करना, परिजने = सेवक-सेविकाओं पर, भूयिष्ठम् = पर्याप्त, दक्षिणा = उदार, भव = रहना, भाग्येषु = भाग्य पर, अनुत्सेकिनी = अभिमानरहित, एवम् = ऐसा व्यवहार करनेवाली, युवतयः = युवतियाँ, गृहिणीपदम् = गृहलक्ष्मी के पद को, यान्ति = प्राप्त करती हैं, वामाः = इसके विपरीत आचरण करनेवाली युवतियाँ, कुलस्य = कुल के लिए, आधयः = रोग।।18।।

गौतमी – एतवान् वधूजनस्योपदेशः। जाते, एतत् खलु सर्वमवधारय।
काश्यपः – वत्से, परिष्वजस्व मां सखीजनं च।
शकुन्तला – तात, इत एव किं प्रियंवदाऽनसूये सख्यौ निवर्तिष्येते।
काश्यपः – वत्से, इमे अपि प्रदेये। न युक्तमनयोस्तत्र गन्तुम्। त्वया सह गौतमी यास्यति।
शकुन्तला – (पितरमाश्लिष्य) कथमिदानीं तातस्याङ्कात् परिभ्रष्टा मलयतटोन्मूलिता चन्दनलतेव देशान्तरे जीवितं धारयिष्यामि। (2019 CZ)

गौतमी – इतना ही नववधुओं के लिए (पर्याप्त) उपदेश है। बेटी, यह सब अवश्य ही स्मरण रखना।

काश्यप – बेटी, मुझसे और अपनी सखियों से गले लग लो।

शकुन्तला – पिता जी, यहीं से क्या प्रियंवदा और अनसूया दोनों सखियाँ लौट जायँगी?

काश्यप – बेटी, ये दोनों भी विवाह करके देनी हैं। (अतः) इनका वहाँ (हस्तिनापुर में) जाना ठीक नहीं है। तुम्हारे साथ गौतमी जायगी।

शकुन्तला – (पिता से लिपटकर) पिता की गोद से बिछुड़ी हुई मैं अब, मलयाचल से उखाड़ी हुई चन्दन-लता की भाँति, दूसरे देश में कैसे जीवन को धारण करूँगी?

शब्दार्थ– प्रदेये = विवाह करके देनी हैं, युक्तम् = ठीक, तत्र = वहाँ हस्तिनापुर में, आश्लिष्य = लिपटकर, अङ्कात् = गोद से, परिभ्रष्टा = बिछुड़ी हुई, मलयतटोन्मूलिता = मलय पर्वत की उपत्यका (पर्वत के निचले भाग) से उखाड़ी हुई, जीवितम् = जीवन को।

विशेष–प्रदेये– इन दोनों को (प्रियंवदा और अनसूया) अभी विवाह करके इन्हें योग्य वर को देना बाकी है। कालिदास ने यहाँ बड़ी चतुरता से कण्व के मुख से अनसूया और प्रियंवदा को शकुन्तला के साथ जाने से रोकवा दिया है, यदि दोनों जातीं तो दुर्वासा के शाप की बात प्रकट हो जाती और उसका कुछ खास प्रभाव न पड़ता।

काश्यपः–वत्से, किमेवं कातराऽसि।

अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे
विभवगुरुभिः कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला।
तनयमचिरात् प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनं
मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि॥19॥ (2016 DN, 20 ZO)

(शकुन्तला पितुः पादयोः पतति।)

काश्यप–बेटी, क्यों इस तरह दुःखी हो रही हो?

बेटी, तुम अतिकुलीन पति के प्रशंसनीय गृहिणी (महारानी) के पद पर स्थित होकर, उसके ऐश्वर्य के कारण महान् कार्यों से प्रतिक्षण व्यस्त (तुम) शीघ्र ही, पूरब दिशा जिस प्रकार (पावन) सूर्य को (उसी प्रकार) पवित्र पुत्र को पैदा करके, मेरे विरहजन्य शोक को भूल जाओगी।।19।।

(शकुन्तला पिता के चरणों पर गिरती है।)

अन्वय—वत्से, त्वम्, अभिजनवतः, भर्तुः, श्लाघ्ये, गृहिणीपदे, स्थिता, तस्य, विभवगुरुभिः, कृत्यैः, प्रतिक्षणम्, आकुला, (त्वम्), अचिरात्, प्राची, इव अर्कम्, पावनम्, तनयम्, प्रसूय, च, मम, विरहजाम्, शुचम्, न, गणयिष्यसि।।19।।

शब्दार्थ— वत्से = बेटी, त्वम् = तुम, अभिजनवतः = अतिकुलीन, सत्कुलोत्पन्न, भर्तुः = पति के, श्लाघ्ये = प्रशंसनीय, गृहिणीपदे = गृहस्वामिनी (महारानी) के पद पर, स्थिता = स्थित होकर, तस्य = उसके, विभवगुरुभिः = ऐश्वर्य के कारण महान्, कृत्यैः = कार्यों से, प्रतिक्षणम् = प्रतिक्षण, आकुला = व्यस्त, (त्वम् = तुम), अचिरात् = शीघ्र ही, प्राची = पूरब दिशा, अर्कम् = सूर्य की, इव = तरह, पावनम् = पवित्र, तनयम् = पुत्र को, प्रसूय = पैदा करके, मम = मेरे, विरहजाम् = विरहजन्य, शुचम् = शोक को, न = नहीं, गणयिष्यसि = गिनोगी, भूल जाओगी।।19।।

विशेष—अभिजनवतः - 'अभिजन' का अर्थ होता है - कुल। मतुप् प्रत्यय यहाँ प्रशंसा अर्थ में है, अतः इसका अर्थ होता है– प्रशस्त कुलवाले।

प्राचीअर्कम् इव—यहाँ यह उपमा विशेष अभिप्राय को प्रकाशित करती है। इसका भाव यह है कि जैसे पूरब दिशा अत्यन्त तेजस्वी, त्रिभुवनवन्द्य सूर्य को पैदा करती है, उसी प्रकार तुम भी अत्यन्त प्रतापी, यशस्वी और योद्धा अर्थात् वन्दनीय पुत्र को जन्म दोगी।

उपमा, काव्यलिङ्ग, समुच्चय अलङ्कार। हरिणी छन्द।

काश्यपः - यदिच्छामि ते तदस्तु।
शकुन्तला -(सख्यावुपेत्य) हला, द्वे अपि मां सममेव परिष्वजेथाम्।
सख्यौ - (तथा कृत्वा) सखि, यदि नाम स राजा प्रत्यभिज्ञानमन्थरो भवेत्, ततस्तस्मा इदमात्मनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं दर्शय।
शकुन्तला - अनेन सन्देहेन वामाकम्पिताऽस्मि।
सख्यौ - मा भैषीः। अतिस्नेहः पापशङ्की।
शार्ङ्गरवः - युगान्तरमारूढः सविता। त्वरतामत्रभवती।
शकुन्तला - (आश्रमाभिमुखी स्थित्वा) तात, कदा न भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये।

काश्यप—मैं तुम्हारे लिये जो चाहता हूँ, वह हो।

शकुन्तला—(दोनों सखियों के पास जाकर) सखियों, तुम दोनों भी एक साथ ही मेरा आलिङ्गन करो।

दोनों सखियाँ—(वैसा ही करके) सखि, सम्भवतः यदि वह राजा (तुम्हें) पहचानने में देर करे तो उसके अपने नाम से अङ्कित यह अँगूठी दिखला देना।

शकुन्तला—तुम लोगों के इस सन्देह से मैं घबड़ा गयी हूँ।

दोनों सखियाँ—डरो मत। अत्यधिक अनुराग अनिष्ट की आशङ्का करनेवाला होता है।

शार्ङ्गरव—सूर्य दूसरे पहर में चढ़ गया है, अतः आप शीघ्रता करें।

शकुन्तला—(आश्रम की ओर मुँह की हुई खड़ी होकर) पिता जी, अब मैं कब फिर तपोवन देखूँगी?

शब्दार्थ— प्रत्यभिज्ञानमन्थरः = पहचानने में शिथिल, पहचानने में देर करे, आत्मनामधेयाङ्कितम् = अपने नाम से अङ्कित, अङ्गुलीयकम् = अँगूठी, आकम्पिता = घबड़ा गयी, भैषीः = डरो, अतिस्नेहः = अत्यधिक अनुराग, पापशङ्की = अनिष्ट की आशङ्का करनेवाला, युगान्तरम् = दूसरे पहर में, आरूढः = चढ़ गया है, प्रेक्षिष्ये = देखूँगी।

विशेष—यदिच्छामि — यहाँ पर कण्व ने 'इच्छामि' कहा। मैं जो कुछ तुम्हारे लिये चाहता हूँ, वह सब पूरा हो। वे शकुन्तला के लिए जो कुछ चाहते हैं, वह आगे श्लोक 20 में स्पष्ट हुआ है।

प्रत्यभिज्ञानमन्थरः—पहचानने में शिथिल। 'प्रत्यभिज्ञान' शब्द काश्मीर शैवदर्शन का पारिभाषिक शब्द है। प्रत्यभिज्ञान उस ज्ञान को कहते हैं, जिसमें स्मृति और अनुभव (अर्थात् प्रत्यक्ष) दोनों ही निहित रहते हैं। इसका अर्थ है कि पहले देखी गयी किसी

वस्तु को फिर देखने पर स्मृति के द्वारा स्मरण करना तथा अनुभव या प्रत्यक्ष द्वारा प्रत्यक्ष देखना। यहाँ अनसूया और प्रियंवदा अप्रत्यक्ष रूप से शकुन्तला को वह उपाय बतलाती हैं, जिससे मुनि दुर्वासा का शाप समाप्त हो जाय।

युगान्तरम्—अर्थात् दूसरा पहर प्रारम्भ हो गया है। तीन घण्टे का एक युग होता है। चौबीस घण्टे में आठ युग होते हैं, चार दिन में तथा चार रात में। इसके अतिरिक्त दिन को चार भागों में विभक्त करने का एक और तरीका था। पूरे आकाश को सोलह हाथों में बाँट देते थे। चार हाथ के नापवाले आकाश को एक युग कहते थे।

काश्यपः – श्रूयताम् –

भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी
दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य।
भर्त्रा तदर्पितकुटुम्बभरेण सार्धं
शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्॥20॥

(2010 CD, 11 HS, 16 TD, 17 NC, NF, NG, NH, 18 BC, BG, 19 DA, DD, DF, 20 ZS)

काश्यप—सुनो–

बहुत दिनों तक चारों समुद्रों तक फैली हुई पृथिवी की सपत्नी (सौत) होकर तथा महारथी पुत्र दौष्यन्ति (भरत) को राज्य-सिंहासन पर बिठाकर और उसके ऊपर कुटुम्ब भार को सौंप देनेवाले पति के साथ शान्त इस आश्रम में फिर से (आकर) निवास करोगी।।20।।

अन्वय—चिराय, चतुरन्तमहीसपत्नी, भूत्वा; अप्रतिरथम्, तनयम्, दौष्यन्तिम्, निवेश्य, तदर्पितकुटुम्बभरेण, भर्त्रा, सार्धम्, शान्ते, अस्मिन्, आश्रमे, पुनः, पदम्, करिष्यसि।।20।।

शब्दार्थ— चिराय = बहुत दिनों तक, चतुरन्तमहीसपत्नी = चारों समुद्रों तक फैली हुई पृथिवी की सपत्नी (सौत), भूत्वा = होकर, अप्रतिरथम् = बेजोड़ महारथी, तनयम् = पुत्र, दौष्यन्तिम् = दौष्यन्ति को, भरत को, निवेश्य = राज्य-सिंहासन पर बिठाकर, तदर्पितकुटुम्बभरेण = उसके ऊपर कुटुम्ब के भार को सौंप देनेवाले, भर्त्रा = पति के, सार्धम् = साथ, शान्ते = शान्त, अस्मिन् = इस, आश्रमे = आश्रम में, पुनः = फिर से, पदम् = आश्रय, निवास, करिष्यसि = करोगी।।20।।

विशेष—महीसपत्नी—पृथिवी की सौत। राजा पृथिवी का पति कहा जाता है। दुष्यन्त पृथिवी-पति था। शकुन्तला उसकी पत्नी थी। इस प्रकार राजा पृथिवी और शकुन्तला दोनों का पति था, अतः शकुन्तला पृथिवी की सौत हुई। इससे राजा के समस्त भूमण्डल के शासक होने की बात सिद्ध होती है।

दौष्यन्तिम्—चूँकि दुष्यन्त का पुत्र अभी पैदा नहीं हुआ है, अतः उसका नामकरण न होने से उसे दौष्यन्ति कहा गया है। यहाँ भरत से अभिप्राय है।

तदर्पितकुटुम्बभरेण—प्राचीन परिपाटी के अनुसार जब पुत्र योग्य हो जाता है और राजा का चौथापन आ जाता था, तब वह पुत्र को सिंहासन पर बैठाकर स्वयं पत्नी के साथ वन में तपस्या करने चला जाता था। यही मनु आदि धर्मशास्त्रियों का विधान है।

माला दीपक अलङ्कार, वसन्ततिलका छन्द।

गौतमी – जाते, परिहीयते गमनवेला। निवर्तय पितरम्। अथवा चिरेणापि पुनः पुनरेषैवं मन्त्रयिष्यते। निवर्ततां भवान्।

काश्यपः – वत्से, उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम्।

शकुन्तला – (भूयः पितरमाश्लिष्य) तपश्चरणपीडितं तातशरीरम्। तन्माऽतिमात्रं मम कृत उत्कण्ठस्व।

गौतमी – बेटी, प्रस्थान का काल व्यतीत होता जा रहा है। (अतः) पिता जी को लौटाओ। अथवा बहुत देर तक भी बार-बार यह इसी प्रकार कहती रहेगी। आप लौटिये।

काश्यप – बेटी, तपस्या का अनुष्ठान रुक रहा है।

शकुन्तला – (पुनः पिता से लिपटकर) आपका शरीर तपस्या के आचरण से अतिकृश है, अतः (आप) मेरे लिये अत्यधिक दुःखी मत होइये।

शब्दार्थ– परिहीयते = व्यतीत होता जा रहा है, गमनवेला = प्रस्थान का काल, उपरुध्यते = रुक रहा है, तपश्चरणपीडितम् = तपस्या के आचरण से अतिकृश।

काश्यपः – (सनिःश्वासम्)

शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम्।
उटजद्वारविरूढं नीवारबलिं विलोकयतः ॥21॥ (2012 EE, 14 CN, 19 DB)

काश्यप–(लम्बी साँस छोड़ते हुए)

बेटी, तुम्हारे द्वारा पहले बनाये गये और (अब) कुटीर के द्वार पर उगे हुए तिन्नी धान के उपहार को देखते हुए मेरा शोक कैसे शान्त होगा?।।21।।

अन्वय–वत्से, त्वया, रचितपूर्वम्, उटजद्वारविरूढम्, नीवारबलिम्, विलोकयतः, मम, शोकः, कथम्, नु, शमम्, एष्यति।।21।।

शब्दार्थ– वत्से = बेटी, त्वया = तुम्हारे द्वारा, रचितपूर्वम् = पहले बनाये गये, उटजद्वारविरूढम् = कुटीर के द्वार पर उगे हुए, नीवारबलिम् = तिन्नी धान के उपहार को, विलोकयतः = देखते हुए, मम = मेरा, शोकः = शोक, कथम् = कैसे, नु = यह वितर्क का द्योतक अव्यय है, शमम् = शान्ति को, एष्यति = प्राप्त होगा?।।21।।

विशेष–रचितपूर्वम्....नीवारबलिम् – वर्षा प्रारम्भ होने पर मुनि-कन्याएँ तिन्नी धान को आस-पास के गड्ढों में बोती थीं। बोने के पूर्व वे अपने गृह-द्वार के दोनों तरफ गोबर का कुठिला (पात्र) बनाकर उसमें तिन्नी-धान भरती थीं। थोड़े समय के बाद यह धान उगकर लहलहा जाता था।

काव्यलिंङ्ग अलङ्कार तथा आर्या छन्द।

गच्छ। शिवास्ते पन्थानः सन्तु।

(निष्क्रान्ता शकुन्तला सहयायिनश्च।)

सख्यौ – (शकुन्तलां विलोक्य) हा धिक्, हा धिक्। अन्तर्हिता शकुन्तला वनराज्या।

काश्यपः – (सनिःश्वासम्) अनसूये, गतवती वां सहचारिणी निगृह्य शोकमनुगच्छतं मां प्रस्थितम्।

उभे – तात, शकुन्तलाविरहितं शून्यमिव तपोवनं कथं प्रविशावः। (2019 DE)

जाओ! तुम्हारा मार्ग मङ्गलमय हो।

(शकुन्तला और उसके साथ जानेवाले व्यक्ति निकल गये।)

दोनों सखियाँ– (शकुन्तला की ओर देखकर) हाय कष्ट है, हाय कष्ट है। शकुन्तला वन-पंक्ति से ओझल हो गयी।

काश्यप– (लम्बी साँस छोड़ते हुए) अनसूया, तुम लोगों की सखी चली गयी। शोक को रोककर चलनेवाले मेरे पीछे-पीछे आओ।

दोनों– पिता जी, शकुन्तला से विहीन, अतः सूने-से प्रतीत होनेवाले इस तपोवन में कैसे प्रवेश करें।

शब्दार्थ– शिवाः = कल्याणकारक, मङ्गलमय, पन्थानः = मार्ग, सहयायिनः = साथ जानेवाले, सहयात्री, अन्तर्हिता = ओझल हो गयी, वनराज्या = वन-पंक्ति से, सहचारिणी = सखी, साथी, निगृह्य = रोककर, शकुन्तलाविरहितम् = शकुन्तला से विहीन, शून्यम् = सूना।

विशेष– शून्यमिव - वस्तुतः प्रिय व्यक्ति के बिछुड़ने पर घर, गाँव, नगर तथा प्रदेश सब-कुछ सूना-सूना प्रतीत होता है। यह प्रत्येक व्यक्ति का सार्वकालिक अनुभव है।

काश्यपः – स्नेहप्रवृत्तिरेवंदर्शिनी। (सविमर्शं परिक्रम्य) हन्त भोः, शकुन्तलां पतिकुलं विसृज्य लब्धमिदानीं स्वास्थ्यम्। कुतः–

अर्थो हि कन्या परकीय एव
तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥22॥

(हिन्दी अनुवाद– 2011 HT, 12 EK, 14 CO, 16 TC, TG, DR, 17 ND, 18 BE, 19 DE, DF)

काश्यप–स्नेह की प्रवृत्ति ऐसा ही देखती है अर्थात् प्रेम की अधिकता के कारण व्यक्ति ऐसा ही अनुभव करता है। (गम्भीरतापूर्वक सोचकर, चारों ओर घूमकर) अहा, शकुन्तला को पतिगृह (ससुराल) भेजकर अब मानसिक शान्ति प्राप्त हुई। क्योंकि–

कन्या वस्तुतः पराया ही धन है। आज उसे पति के घर भेजकर मेरा यह अन्तःकरण, धरोहर को वापस करनेवाले व्यक्ति की तरह, अत्यन्त प्रसन्न हो गया है।।22।।

अन्वय–कन्या, हि, परकीयः, एव, अर्थः, (अस्ति), अद्य, ताम्, परिग्रहीतुः, (पार्श्वे), संप्रेष्य, मम, अयम्, अन्तरात्मा, प्रत्यर्पितन्यासः, इव, प्रकामम्, विशदः, जातः।।22।।

शब्दार्थ– स्नेहप्रवृत्तिः = स्नेह का सञ्चार, सविमर्शम् = गम्भीरतापूर्वक सोचकर, स्वास्थ्यम् = स्वस्थता, मानसिक शान्ति, कन्या = अविवाहित लड़की, हि = वस्तुतः, परकीयः = पराया, एव = ही, अर्थः = धन, अद्य = आज, ताम् = उसे, परिग्रहीतुः = पति के, (पार्श्वे = पास), संप्रेष्य = भेजकर, मम = मेरा, अयम् = यह, अन्तरात्मा = अन्तःकरण, प्रत्यर्पितन्यासः = धरोहर को वापस करनेवाले व्यक्ति की, इव = तरह, प्रकामम् = अत्यन्त, विशदः = प्रसन्न, जातः = हो गया है।।22।।

विशेष–स्नेहप्रवृत्तिः–यदि आपका अपना घनिष्ठ व्यक्ति बहुत दिन तक साथ रहकर बिछुड़ा हो तो सारा वातावरण आपको सूना-सा लगेगा, किन्तु उसी समय यदि उस स्थान में कोई बाहरी व्यक्ति आ जाय तो उस (बाहरी व्यक्ति) को वह स्थान सूना नहीं लगेगा। इससे व्यक्त है कि स्नेह-व्यवहार ही इस प्रकार देखता है।

प्रत्यर्पितन्यासः पुत्री पिता के पास वस्तुतः धरोहर के रूप में ही रहती है। उसे योग्य व्यक्ति को देने पर ही पिता को शान्ति मिलती है।

उत्प्रेक्षा अलङ्कार तथा इन्द्रवज्रा छन्द है।

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे।)
॥इति चतुर्थोऽङ्कः॥

(सब चले जाते हैं।)
।। चतुर्थ अङ्क समाप्त ।।

सूक्तिपरक वाक्यों की ससन्दर्भ हिन्दी व्याख्या

1. भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद् वाच्यं वधू बन्धुभिः। (2011 HQ, 17 NG, NI, 18 BD, BG, 19 CZ, 20 ZQ, ZU)

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – महर्षि काश्यप दुष्यन्त के पास सन्देश भिजवाते हैं कि वे सामान्य रूप से शकुन्तला को अपनी रानियों में स्थान दें। इससे आगे वह कितना सम्मानपूर्वक पद प्राप्त करती है वह तो कन्या के भाग्य के अधीन है इस विषय में वधू के बन्धुओं को नहीं कहना चाहिए।

2. न खलु धीमतां कश्चिद्विषयो नाम। (2013 BF, BE, 14 CO, 16 DN, TG, 17 ND, NG, 20 ZT)

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – काश्यप ऋषि अपनी पुत्री शकुन्तला को पतिगृह गमन के समय उपदेश देते हुए कहते हैं– पुत्री! अब तुम्हें कुछ उपदेश देना है। यद्यपि हम लोग वन में रहते हैं, फिर भी हम लौकिक-व्यवहार को भी जानते हैं तब शार्ङ्गरव नामक शिष्य कहता है कि बुद्धिमानों के लिए तो सब कुछ ज्ञात होता है। आप तो बुद्धिमान् हैं और वह कौन-सी बातें हैं, जिसे भला आप न जानते हों।

3. यान्त्येवं गृहिणी पदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः। (2012 EE, EH, 14 CM, CN, CR, 16 TD, 17 ND, NF, 18 BG, 19 DA, DC, DE, DF, 20 ZO, ZQ, ZR, ZS)

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – महर्षि काश्यप शकुन्तला को उपदेश देते हुए कहते हैं कि पतिगृह में जाकर गुरुजनों की सेवा करना, अपनी सपत्नियों के साथ सखियों जैसा व्यवहार करना आदि। जो युवतियाँ ऐसा आचरण करती हैं, वे तो गृहस्वामिनी का पद प्राप्त कर लेती हैं परन्तु जो इसके विपरीत व्यवहार करती हैं, वे कुल को नष्ट करनेवाली होती हैं।

4. वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्। (2019 DA, DB)

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – पतिगृह के लिए आश्रम से शकुन्तला विदा हो रही है। काश्यप ऋषि उसे गृहस्थ का उपदेश देना चाहते हैं। यह शंका हो सकती है कि वनवासी तपस्वी संसार की बातों को क्या जानें? इसीलिए काश्यप कहते हैं कि हम लोग वनवासी तपस्वी हैं फिर भी हम लोक-व्यवहार के जानकार हैं। उनका शिष्य शार्ङ्गरव उनके कथन का समर्थन करता है कि ऐसा कोई विषय नहीं जिसे बुद्धिमान् न जानते हों।

5. अपसृत पाण्डुपत्रा मुञ्चन्तयश्रूणीव लताः। (2017 NF, 18 BE, 19 DA, DB, 20 ZT)

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – शकुन्तला के पतिगृह गमन के समय आश्रम में पशु-पक्षी और तरु-लता भी वियोगजन्य दुःख से पीड़ित हैं। हिरणी जो कुशा चर रही थी, अब कुशा का ग्रास उससे निगला नहीं जाता, बाहर निकला आ रहा है। मोर जो नृत्य कर रहे थे, उन्होंने नाचना छोड़ दिया है। लताओं से पीले पत्ते टूट कर गिर रहे हैं, मानो वे आँसू बहा रहे हैं।

6. अर्थो हि कन्या परकीय एव। (2010 BY, 11 HV, 16 TF, 17 NG, NH, 18 BD, 19CZ, DA, DB, DC, DD, 20 ZP, ZQ, ZS)

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – महर्षि कण्व मन में विचार करते हैं कि शकुन्तला को उसके पति के घर भेजकर मैं आज स्वस्थ अनुभव

कर रहा हूँ। क्योंकि कन्या धन तो दूसरे का ही होता है। आज उसे उसके पति के घर भेजकर मैं वैसे ही प्रसन्न हृदय हूँ, जैसे बहुत दिनों से अपने पास रखी हुई धरोहर को उसके स्वामी को सौंपकर मनुष्य प्रसन्न होता है।

7. गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति।

(2011 HR, HT, 12 EF, 13 BD, 16 TI, 17 ND, NH, NI, 18 BG, 20 ZO, ZR, ZT, ZU)

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – पति घर जाते समय चकवी-चकवा को अलग होकर व्याकुल होता देखकर दुःखी शकुन्तला से अनसूया कहती है कि हे सखि! ऐसा मत सोचो, अपने सहचर को कमलिनी के पत्ते तिरोहित देख चकवी चीखती है यह एक सीमा तक सच है, वह विरह पीड़ा में फँस जाती है, वह ठीक है लेकिन यह बिल्कुल सत्य है कि वह अपने प्रियतम के बिना दुःख से लम्बी रातों को केवल इस आशा में बिता देती है कि सुबह होगी, पुनर्मिलन होगा, यही आशा विरह दुःख को सहन कराती है।

8. अतिस्नेहः पापशङ्की। (2018 BD, BE, 19 DC, DD, DE, DF, 20 ZO, ZP, ZQ, ZT)

सन्दर्भ–प्रस्तुत सूक्ति 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क से अवतरित है। इसके रचयिता महाकवि कालिदास हैं। इस सूक्ति में पतिगृह-गमन से पूर्व शकुन्तला अपनी सहेलियों से विदा ले रही है। उसे दुर्वासा के शाप का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं है। दोनों सखियाँ जब शकुन्तला से कहती हैं कि यदि वह राजा तुम्हें पहचानने में देर करे तो उसे अँगूठी दिखा देना। यह सुनकर शकुन्तला अनिष्ट की आशङ्का से घबरा जाती है परन्तु दोनों सखियाँ उसे समझाती हुई कहती हैं–

हिन्दी व्याख्या–हे प्रिय सखि! शकुन्तला, डरो मत। स्नेह तो किसी अनिष्ट की आशङ्का व्यर्थ में ही करा देता है। हम जिससे स्नेह करते हैं, उसके विषय में हम हमेशा कुशलता भरी बातें ही सुनना चाहते हैं। समाचार न मिलने पर हम क्या-क्या सोच-विचार करते हैं, शङ्काएँ करते हैं, ये व्यर्थ की शङ्काएँ अतिस्नेह के कारण पैदा होती हैं। अतः तुम डरो मत कुछ नहीं होगा।

9. शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः। (2017 NC, NI, 18 BG, 19 DD, DE, DF, 20 ZT)

सन्दर्भ–यह सूक्ति कविकुलगुरु कालिदासविरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क से उद्धृत है।

हिन्दी व्याख्या–शकुन्तला के पतिगृह-गमन-काल में आशीर्वादात्मक ध्वनि सुनायी देती है कि ''जो बीच-बीच में कमलों से हरे-भरे तालाबों से रमणीय स्थानोंवाले, जिसमें छायादार वृक्षों द्वारा सूर्य की किरणों के ताप को नियन्त्रित किया जाय तथा जिसमें कमलों के पराग की कोमल धूलिवाली शान्त एवं अनुकूल वायु हो, वह मार्ग उसके लिए कल्याणकारी हो।''

10. ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तथः। (2014 CP, 17 NG, NF, NH, 20 ZR)

सन्दर्भ–प्रस्तुत सूक्ति महाकवि कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के चतुर्थ अङ्क से उद्धृत है।

हिन्दी व्याख्या–सूक्ति का अर्थ है–''जलाशय तक प्रिय व्यक्ति के साथ जाना चाहिए।'' शार्ङ्गरव महर्षि काश्यप (कण्व) से कहता है कि भगवन यात्रा के समय जलाशय तक प्रिय व्यक्ति के साथ जाना चाहिए–ऐसा सुना जाता है। स्मृतियों के अनुसार जब कोई अपना व्यक्ति बाहर जाने लगे तो घर के लोगों को चाहिए कि वे जलाशय अथवा किसी दुधारू वृक्ष तक उसे पहुँचायें। यहाँ संयोग से दोनों उपस्थित हैं। आश्रम के व्यक्तियों को लौटने की सलाह दी जा रही है।

11. सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते। (2017 NC, 18 BC, 19 CZ, 20 ZP, ZS)

सन्दर्भ–प्रस्तुत सूक्ति महाकवि कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के चतुर्थ अङ्क से उद्धृत है। यहाँ पर शकुन्तला एवं मृग के पुत्रवत् प्रेम का चित्रण किया गया है।

हिन्दी व्याख्या—शकुन्तला पूछती है कि यह मेरे वस्त्रों को कौन खींच रहा है? तब महर्षि कण्व कहते हैं कि यह मृग तुम्हारे वस्त्र को खींच रहा है, जिसे कि तुमने श्यामाक (साँवा) की मुट्ठियों से खिलाकर बड़ा किया था, जिसे तुम पुत्रतुल्य मानती हो और जिसके मुख के घावों पर इंगुदी का तेल लगाया करती थी अर्थात् मातृस्नेह के कारण यह मृग तुम्हें यहाँ से आगे बढ़ने से रोकना चाहता है। यहाँ पर एक ओर शकुन्तला का आश्रम के जीवों के प्रति प्रेम व्यक्त हुआ है तो दूसरी ओर वन्य जीवों का शकुन्तला के प्रति स्नेह प्रदर्शित किया गया है।

12. मार्गे पदानि खलु ते विषमी भवन्ति। (2017 NC, 18 BC, BE, 20 ZU)

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति महाकवि कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के चतुर्थ अङ्क से उद्धृत है। यहाँ पर शकुन्तला के विदाई के समय होने वाले कष्ट की मनःस्थिति का चित्रण किया गया है।

हिन्दी व्याख्या—शकुन्तला से काश्यप कहते हैं कि तुम्हारे नेत्रों की बरौनियाँ ऊपर उठी हुई हैं। जब उनमें अँसू आ जाते हैं तो उनकी दर्शन शक्ति रुक जाती है। अतः धैर्य धारण कर इन आँसुओं को रोको। तात्पर्य यह है कि अश्रुपतन से अमंगल न हो, इसलिए उनको रोकने के लिए तुमने अपने नेत्र लोमों को ऊपर उठा रखा है। परन्तु फिर भी लगातार रोने के कारण जो आँसू आ जाते हैं, उनसे तुम्हारे मार्ग देखने की शक्ति रुद्ध हो जाती है। अतः धैर्य धारण कर इन लगातार बहने वाले आँसुओं को रोक लो। केवल अमंगल वारणार्थ नेत्र लोमों को ऊपर उठा लेना पर्याप्त नहीं है। रोना बन्द किये बिना अश्रुप्रवाह बन्द न होगा। सारांश यह है कि धीरज धारण कर इन आँसुओं को पोछ डालो, रोना बन्द करो। क्योंकि इन आँसुओं के कारण तेरी उठी हुई बरौनियों वाली आँखें ठीक से मार्ग नहीं देख पा रही हैं। अतएव इस ऊबड़-खाबड़ भूमि भाग वाले मार्ग पर तुम्हारे पैर लड़खड़ा रहे हैं एवं उल्टे-सीधे पड़ रहे हैं।

13. अद्य प्रभृति दूरपरिवर्तिनी ते खलु भविष्यामि। (2017 ND, 19 DA)

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति महाकवि कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के चतुर्थ अङ्क से उद्धृत है। यहाँ पतिगृह गमनार्थ लता के आलिंगन का वर्णन है।

हिन्दी व्याख्या—शकुन्तला वनज्योत्स्ना के पास जाकर तथा लता का आलिंगन करती हुई कहती है कि हे वनज्योत्स्ना! आम्र वृक्ष से लिपटी हुई भी तुम इधर की ओर आयी हुई अपनी शाखा रूपी भुजाओं से गले मिलो। आज से मैं तुमसे दूर हो जाऊँगी। मैं पतिगृह के लिए विदा हो रही हूँ। मेरा पुनरागमन कब होगा, इसे मैं नहीं जानती हूँ।

➡ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सख्यौ किं नाट्यन्त्यौ प्रविशतः?
उत्तर : सख्यौ कुसुमावचयं नाट्यन्त्यौ प्रविशतः।

प्रश्न 2. शकुन्तला केन विधिना निर्वृत्तकल्याणा संवृत्ता?
उत्तर : शकुन्तला गान्धर्वेण विधिना निर्वृत्तकल्याणा संवृत्ता।

प्रश्न 3. कीदृशी आकृतिः गुणविरोधिनो न भवति?
उत्तर : विशेषाकृतिः गुणविरोधिनो न भवति।

प्रश्न 4. कन्या कस्मै दातव्या?
उत्तर : गुणवते कन्या दातव्या।

प्रश्न 5. पितरः कदा कृतार्थाः भवन्ति?
उत्तर : पुत्र्यैः गुणवान् वरं दत्वा पितरः कृतार्थाः भवन्ति।

प्रश्न 6. शकुन्तला हृदयेन कुत्र स्थिता?
उत्तर : शकुन्तला हृदयेन राजा दुष्यन्तध्याने स्थिता।

प्रश्न 7. महर्षे दुर्वाससः आगमनकाले शकुन्तला कुत्र सन्निहितासीत्?
उत्तर : महर्षे दुर्वाससः आगमनकाले शकुन्तला उटजे सन्निहितासीत्।

प्रश्न 8. उटजस्थिता शकुन्तला केन शप्ता?
उत्तर : उटजस्थिता शकुन्तला दुर्वाससा शप्ता।

प्रश्न 9. नेपथ्ये 'अयमहं भो' इति को ब्रूते?
उत्तर : नेपथ्ये 'अयमहं भो' इति दुर्वासा ब्रूते।

प्रश्न 10. अद्य हृदयेन असन्निहता का अस्ति?
उत्तर : अद्य हृदयेन असन्निहता शकुन्तलाऽस्ति।

प्रश्न 11. शकुन्तला का आसीत्? (2016 TF)
उत्तर : शकुन्तला अतिथिपरिभाविनि आसीत्।

प्रश्न 12. आः अतिथिपरिभाविनि इति केन उक्तम्?
उत्तर : आः अतिथिपरिभाविनि इति दुर्वासा मुनिना उक्तम्।

प्रश्न 13. दुर्वासा प्रकृत्या कीदृशो महर्षिरासीत्? (2017 NI)
उत्तर : दुर्वासा प्रकृत्या सुलभकोपो महर्षिरासीत्।

प्रश्न 14. कस्मात् कारणात् दुर्वाससा शकुन्तला अभिशप्ता?
उत्तर : शकुन्तला दुर्वासायाः अतिथिसत्कारम् नाकरोत् अतः सः तां शप्तवान्।

प्रश्न 15. प्रकृतिवक्रः कः महर्षिः?
उत्तर : महर्षिः दुर्वासा प्रकृतिवक्रः।

प्रश्न 16. प्रियंवदया कः सानुक्रोशः कृतः?
उत्तर : प्रियंवदया दुर्वासा सानुक्रोशः कृतः।

प्रश्न 17. प्रियंवदयाः प्रार्थितः दुर्वासा शाप-निवारणाय कमुपायम् उक्तवान्?
उत्तर : दुर्वासा उक्तवान् यत् अभिज्ञान आभरण-दर्शनेन शापो निवर्तिष्यते।

प्रश्न 18. **कस्य वचनम् अन्यथाभवितुं नार्हति?**
उत्तर : दुर्वाससः वचनम् अन्यथाभवितुं नार्हति।

प्रश्न 19. **शापः कथं निवर्तिष्यते?**
उत्तर : शापोऽभिज्ञानभरणदर्शनेन निवर्तिष्यते।

प्रश्न 20 **दुष्यन्तनामाङ्कितं किमाभरणम् शकुन्तला पार्श्वे आसीत्?**
उत्तर : दुष्यन्तनामाङ्कितं अङ्गुलीयकं शकुन्तला पार्श्वे आसीत्।

प्रश्न 21. **राजर्षिणा कीदृशम् अङ्गुलीयकं शकुन्तलायाः पिनद्धम्।**
उत्तर : राजर्षिणा स्वनामधेयाङ्कितम् अङ्गुलीयकं शकुन्तलायाः पिनद्धम्।

प्रश्न 22. **काश्यपेन शिष्यः किमर्थम् आदिष्टोऽस्ति?**
उत्तर : काश्यपेन शिष्यः वेलोपलक्षणार्थम् आदिष्टोऽस्ति।

प्रश्न 23. **शिष्यः गुरवे कां निवेदयति?**
उत्तर : शिष्यः गुरवे उपस्थितां होमवेलां निवेदयति।

प्रश्न 24. **राज्ञा दुष्यन्तेन शकुन्तलायां कीदृशम् आचरितम्?**
उत्तर : राज्ञा दुष्यन्तेन शकुन्तलायां अनार्यम् आचरितम्।

प्रश्न 25. **अनसूया कीदृशीं शकुन्तलां तातकाश्यपस्य निवेदयितुं न पारयति?**
उत्तर : अनसूया दुष्यन्तपरिणीताम् आपन्नसत्त्वां शकुन्तलां तातकाश्यपस्य निवेदयितुं न पारयति।

प्रश्न 26. **सुशिष्यदत्ता विद्येव का?**
उत्तर : सुशिष्यदत्ता विद्येव शकुन्तला।

प्रश्न 27. **का अशोचनीया संवृत्ता?**
उत्तर : शकुन्तला अशोचनीया संवृत्ता।

प्रश्न 28. **शकुन्तला विषये आकाशवाणी काश्यपं किमाह?**
उत्तर : आकाशवाण्या शकुन्तला विषये काश्यपः उक्तः यत् ब्रह्मन्! स्वपुत्रीं शकुन्तलां दुष्यन्तस्य तेजोधारिणीं जानीहि।

प्रश्न 29. **काश्यपेन किम् संकल्पितम्?**
उत्तर : काश्यपेन संकल्पितम् यत् शकुन्तलां आत्म-सदृशं भर्तारं प्राप्तं कुर्यात्।

प्रश्न 30. **भुवः भूतये शकुन्तला किं दधानाऽऽस्ते?**
उत्तर : भुवः भूतये शकुन्तला दुष्यन्तेन आहितं तेजः दधानाऽऽस्ते।

प्रश्न 31. **अग्निगर्भा शमीव का?**
उत्तर : अग्निगर्भा शमीव शकुन्तला।

प्रश्न 32. **शकुन्तलायाः आभरणोचितं रूपम् आश्रमसुलभैः प्रसाधनैः किं क्रियते?**
उत्तर : शकुन्तलायाः आभरणोचितं रूपम् आश्रमसुलभैः प्रसाधनैः विप्रकार्यते।

प्रश्न 33. **उपायनहस्तौ कौ प्रविशतः?**
उत्तर : उपायनहस्तौ ऋषिकुमारौ प्रविशतः।

प्रश्न 34. **किं विलोक्य सर्वे विस्मिताः?**
उत्तर : अलङ्करणानि विलोक्य सर्वे विस्मिताः।

प्रश्न 35. **अलङ्करणानि कुत्र प्राप्तानि?**
उत्तर : अलङ्करणानि तात काश्यपप्रभावात् प्राप्तानि।

प्रश्न 36. पतिगृहगमनकाले शकुन्तलायै केन-केन के-के उपहाराः प्रदत्ताः?

उत्तर : पतिगृहगमनकाले शकुन्तलायै केनचित् वृक्षेण चन्द्रधवलं क्षौमं, केनचित् चरणरञ्जनार्थं लाक्षारसं दत्तं, वनदेवताभिश्च आभूषणानि दत्तानि।

प्रश्न 37. शकुन्तलायाः पतिगृहगमनं विचिन्त्य काश्यपस्य कीदृशी अवस्था अभवत्?

उत्तर : शकुन्तलायाः पतिगृहगमनं विचिन्त्य काश्यपस्य हृदयं उत्कण्ठितम् जातम्।

प्रश्न 38. का व्रीडां रूपयति?

उत्तर : शकुन्तला व्रीडां रूपयति।

प्रश्न 39. ऋषिकुमारकौ वनस्पतिसेवां कस्मै निवेदयतः?

उत्तर : ऋषिकुमारकौ वनस्पतिसेवां अभिषेकोत्तीर्णाय काश्यपाय निवेदयतः।

प्रश्न 40. शकुन्तलावियोगम् उत्प्रेक्ष्य काश्यपः किम्भूतो भवति?

उत्तर : शकुन्तलावियोगम् उत्प्रेक्ष्य काश्यपः स्तम्भिवाष्पवृत्तिकलुषो भवति।

प्रश्न 41. काश्यपः केन छन्दसा आशास्ते?

उत्तर : काश्यपः ऋक्छन्दसा आशास्ते।

प्रश्न 42. शकुन्तलां के पावयन्तु?

उत्तर : शकुन्तलां वैताना वह्नयः पावयन्तु।

प्रश्न 43. किम्भूताः वैतानाः वह्नयः शकुन्तलां पावयन्तु?

उत्तर : वेदीं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः, समिद्वन्तः प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः, हव्यगन्धैः दुरितम् अपघ्नन्तः वैतानाः वह्नयः शकुन्तलां पावयन्तु।

प्रश्न 44. केषु अपीतेषु शकुन्तला जलं पातुं न व्यवस्यति?

उत्तर : वनवृक्षेषु अपीतेषु शकुन्तला जलं पातुं न व्यवस्यति।

प्रश्न 45. वृक्षेषु अपीतेषु शकुन्तला किं कर्तुं न व्यवस्यति?

उत्तर : वृक्षेषु अपीतेषु शकुन्तला जलं पातुं न व्यवस्यति।

प्रश्न 46. वृक्षाणाम् आद्ये कुसुमप्रसूतिसमये शकुन्तलायाः किं भवति?

उत्तर : वृक्षाणाम् आद्ये कुसुमप्रसूतिसमये शकुन्तलायाः उत्सवः भवति।

प्रश्न 47. शकुन्तला कुत्र याति?

उत्तर : शकुन्तला पतिगृहं याति।

प्रश्न 48. शकुन्तला कैः अनुज्ञातम्?

उत्तर : शकुन्तला सन्निहितैः तपोवनतरुभिः अनुज्ञातम्।

प्रश्न 49. वनवासबन्धुभिः कैः शकुन्तला अनुमतगमना?

उत्तर : वनवासबन्धुभिः तरुभिः शकुन्तला अनुमतगमना।

प्रश्न 50. वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम् इति कस्योक्तिः? (2016 TD)

उत्तर : वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम् इति काश्यपस्योक्तिः।

प्रश्न 51. वनौकसोऽपि मुनयः कीदृशाः भवन्ति? (2016 TF)

उत्तर : वनौकसोऽपि मुनयः लौकिकज्ञा भवन्ति।

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. शकुन्तलां शापं कः अददात्?
(अथवा) शकुन्तलायै केन शापः दत्तः?
(अथवा) शकुन्तला केन शप्ताऽभूत्? (2012 EH, 14 CR)
(क) कण्वः (ख) गौतमी (ग) दुर्वासाः (घ) विश्वामित्रः
उत्तर— (ग) दुर्वासाः।

2. 'कोऽन्योहुतवहाद् दग्धुं प्रभवति' — यह कथन किसका है?
(क) प्रियंवदा (ख) अनसूया (ग) गौतमी (घ) कण्व
उत्तर— (क) प्रियंवदा।

3. अवसितमण्डना का आसीत्?
(क) प्रियंवदा (ख) अनसूया (ग) शकुन्तला (घ) गौतमी
उत्तर— (ग) शकुन्तला।

4. 'उपस्थितां होमवेलां गुरवे निवेदयामि' यह वाक्य किसके द्वारा कहा गया है?
(क) प्रियंवदा (ख) अनसूया (ग) गौतमी (घ) शिष्य **उत्तर—** (घ) शिष्य।

5. प्रतिपेलवा का?
(क) प्रियंवदा (ख) गौतमी (ग) शकुन्तला (घ) अनसूया
उत्तर— (ग) शकुन्तला।

6. कन्या कीदृशोऽर्थः?
(क) परकीयो (ख) स्वकीयो (ग) पितरौ (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर— (क) परकीयो।

7. दुष्यन्तः कस्य राज्यस्य (कुत्रत्यः) राजा आसीत्? (2011 HU, 12 EG, 13 BD)
(क) कोशलस्य (ख) विदर्भस्य (ग) मधुरायाः (घ) हस्तिनापुरस्य
उत्तर— (घ) हस्तिनापुरस्य।

8. 'शिवास्ते पन्थानः सन्तु' यह कथन किसका है?
(क) गौतमी का (ख) काश्यप का (ग) प्रियंवदा का (घ) अनसूया का
उत्तर— (ख) काश्यप का।

9. कालिदासस्य प्रसिद्धोऽलङ्कारोऽस्ति—
(क) अर्थान्तरन्यासः (ख) श्लेषः (ग) उपमा (घ) रूपकम् **उत्तर—** (ग) उपमा।

10. 'गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया' इस उक्ति का वक्ता है— (2019 DB)
अथवा 'गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया।' यह उक्ति किसकी है? (2020 ZR, ZT)
(क) दुष्यन्त (ख) नारद (ग) अनसूया (घ) शकुन्तला
उत्तर— (ग) अनसूया।

11. 'सौभाग्यदेवताऽर्चनीया' वाक्य आया है—
(क) प्रियंवदा के लिए (ख) शकुन्तला के लिए (ग) अनसूया के लिए (घ) गौतमी के लिए
उत्तर— (ख) शकुन्तला के लिए।

12. ''एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः'' केन कथितम् इदं वाक्यम्? (2011 HR, 12 EE, 14 CN)
(क) अनसूयया (ख) गौतम्या (ग) प्रियंवदया (घ) शकुन्तलया
उत्तर— (ग) प्रियंवदया।

13. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना कालिदास की है? (2018 BE)
(क) उत्तररामचरितम् (ख) मृच्छकटिकम् (ग) मेघदूतम् (घ) प्रतिमानाटकम्
उत्तर— (ग) मेघदूतम्।

14. 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' वाक्य की वक्ता है–
(क) प्रियंवदा (ख) अनसूया (ग) गौतमी (घ) मैत्रेयी
उत्तर– (क) प्रियंवदा।

15. कस्मिन् समये शकुन्तलायाः उत्सवः भवति?
(क) कुसुम प्रसूति समये (ख) वर्षाकाले (ग) वसन्तागमने (घ) मृगीप्रसूति समये
उत्तर– (क) कुसुम प्रसूति समये।

16. चतुर्थे अंके कस्य रसस्य निष्पत्तिः अभवत् ?
(क) संयोग शृंगारस्य (ख) वियोग शृंगारस्य (ग) अद्भुत रसस्य (घ) हास्य रसस्य
उत्तर– (ख) वियोग शृंगारस्य।

17. 'सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता' वाक्य किसके लिए कहा गया है–
(क) गौतमी के लिए (ख) प्रियंवदा के लिए (ग) नारद के लिए (घ) शकुन्तला के लिए
उत्तर– (घ) शकुन्तला के लिए।

18. इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि' उक्ति है–
(क) कण्व की (ख) शिष्य की (ग) गौतमी की (घ) अनसूया की
उत्तर– (ख) शिष्य की।

19. प्रियंवदायाः सख्याः किन्नाम आसीत्?
(क) शकुन्तला (ख) अनसूया (ग) मैत्रेयी (घ) गार्गी
उत्तर– (क) शकुन्तला।

20. 'प्रकृतिवक्र' है–
अथवा 'प्रकृतिवक्र' कौन है? (2020 ZT, ZP)
(क) शारद्वत (ख) शार्ङ्गरव (ग) दुर्वासा (घ) नारद
उत्तर– (ग) दुर्वासा।

21. कः आसीत् सुलभकोपो महर्षिः? (2014 CO, 20 ZT)
(अथवा) सुलभकोपो महर्षिः कः आसीत्? (2017 NF)
(क) काश्यप (ख) कण्व (ग) नारद (घ) दुर्वासा
उत्तर– (घ) दुर्वासा।

22. काश्यप को शकुन्तला के विवाह की सूचना किसने दी है–
(क) प्रियंवदा ने (ख) गुरु ने (ग) अशरीरी छन्दोमयी वाणी ने (घ) नारद ने
उत्तर– (ग) अशरीरी छन्दोमयी वाणी ने।

23. पतिगृहं गच्छन्त्या शकुन्तलया सह का गच्छत्?
(अथवा) महर्षि कण्वेन पति गृहं गच्छन्त्या शकुन्तलया सह का प्रेषिता?
(अथवा) शकुन्तलया सह हस्तिनापुरं का गता?
(क) अनसूया (ख) प्रियंवदा (ग) गौतमी (घ) वृद्धतापसी
उत्तर– (ग) गौतमी।

24. कुसुम प्रसूति समये कस्याः उत्सव भवति स्म? (2018 BD)
(क) प्रियंवदायाः (ख) अनसूयायाः (ग) शकुन्तलायाः (घ) गौतम्याः
उत्तर– (ग) शकुन्तलायाः।

25. 'वत्से! वीरप्रसविनी भव' यह आशीर्वाद है–
(क) गौतमी का (ख) पहली तापसी का (ग) अनसूया का (घ) तीसरी तापसी का
उत्तर– (घ) तीसरी तापसी का।

26. तृतीय तापसी का आशीर्वाद है– (2019 DA)
(क) वत्से! सुखं लभस्व (ख) वत्से! भर्तुर्बहुमता भव (ग) वत्से! वीरप्रसविनी भव (घ) एतेषु न कश्चिदापि
उत्तर– (ख) वत्से! भर्तुर्बहुमता भव।

27. शकुन्तलासाकं राजकुलं का गता।
(अथवा) प्रस्थान काले शकुन्तलया सह गच्छति। (2019 DA)
(क) प्रियंवदा (ख) अनसूया (ग) गौतमी (घ) मेनका
उत्तर– (ग) गौतमी।

28. कस्याः प्रस्थानकौतुकं निवर्त्यताम्–
(क) शकुन्तलायाः (ख) अनसूयायाः (ग) प्रियंवदायाः (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (क) शकुन्तलायाः।

29. शकुन्तलां कोऽपालयत्? (2013 BI, 19 DA, 20 ZQ, ZS)
अथवा **शकुन्तला कस्य पालिता पुत्री आसीत्?** (2011 HQ, 12 EJ, 18 BE, 19 DF)
(क) वशिष्ठः (ख) अगस्त्यः (ग) विश्वामित्रः (घ) कण्वः
उत्तर– (घ) कण्वः।

30. संस्कृतमाश्रित्य पठति–
(क) शकुन्तला (ख) प्रियंवदा (ग) गौतमी (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (ख) प्रियंवदा।

31. ''पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं''–किसका कथन है?
(क) शकुन्तला (ख) प्रियंवदा (ग) अनसूया (घ) गौतमी
उत्तर– (ग) अनसूया।

32. 'शान्तानुकूल पवनश्च शिवश्च पन्थाः' किसका कथन है?
(क) वशिष्ठ का (ख) काश्यप का (ग) प्रियंवदा का (घ) दुष्यन्त का
उत्तर– उपर्युक्त किसी का नहीं। यह आकाशवाणी है।

33. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कविः (रचयिता) कः अस्ति? (2016 TH)
(क) राजशेखरः (ख) भवभूतिः (ग) भट्टनारायणः (घ) कालिदासः
उत्तर– (घ) कालिदासः।

34. शकुन्तलायाः निवसने सज्जते–
(क) वनज्योत्स्ना (ख) पुत्रकृतकः मृगः (ग) लता (घ) हरिणः
उत्तर– (ख) पुत्रकृतकः मृगः।

35. ''न खलु धीमतां कश्चिद् विषयो नाम''–किसका कथन है? (2013 BG, 20 ZU)
(क) शारद्वत (ख) विदूषक (ग) कण्व (घ) शाङ्र्गरव
उत्तर– (घ) शाङ्र्गरव।

36. गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति इति वचनं आह–
(क) काश्यपः (ख) गौतमी (ग) अनसूया (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (ग) अनसूया।

37. शकुन्तलायाः मातुः नाम आसीत्। (2011 HW, 13 BC)
(अथवा) शकुन्तलायाः जननी कास्ति? (2020 ZR)
(अथवा) शकुन्तलायाः माता का?
(क) मेनका (ख) सुमित्रा (ग) गार्गी (घ) उर्वशी
उत्तर– (क) मेनका।

38. शकुन्तलायाः दुष्यन्ते स्नेहप्रवृत्तिः अस्ति–
(क) बान्धवकृता (ख) अबान्धवकृता (ग) पूर्वजन्मकृता (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (ख) अबान्धवकृता।

39. वनौकसौऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम् इति वचनम् आह– (2016 TD)
(क) शारद्वतः (ख) काश्यपः (ग) शिष्यः (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (ख) काश्यपः।

40. दुष्यन्तः कः आसीत् ? (2014 CP, 16 TG)
(क) राजा (ख) मन्त्री (ग) तपस्वी (घ) कुलपतिः
उत्तर– (क) राजा।

41. 'तात! वन्दे' इति वचनम् आह–
(क) प्रियंवदा (ख) शकुन्तला (ग) अनसूया (घ) गौतमी
उत्तर– (ख) शकुन्तला।

42. 'ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः' इस वाक्य का वक्ता है–
(क) काश्यपः (ख) शार्ङ्गरव (ग) नारद (घ) गौतमी
उत्तर– (ख) शार्ङ्गरव।

43. 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति' वाक्य कहा है–
(क) अनसूया ने (ख) प्रियंवदा ने (ग) शकुन्तला ने (घ) नारद ने
उत्तर– (क) अनसूया ने।

44. वैतानास्त्वां वह्नयः पावयन्तु-का वक्ता कौन है?
(क) शार्ङ्गरव (ख) गौतमी (ग) प्रियंवदा (घ) काश्यप
उत्तर– (घ) काश्यप।

45. काश्यपः कः आसीत्?
(क) मन्त्री (ख) तपस्वी (ग) राजा (घ) भृत्यः
उत्तर– (ख) तपस्वी।

46. किं शीलः तपस्विजनः?
(क) सुखशीलः (ख) दुखशीलः (ग) कर्मशीलः (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (ख) दुःखशीलः।

47. प्रियम्वदा कस्याः सखी आसीत् ? (2010 BY)
(क) दुष्यन्तस्य (ख) अनसूयायाः (ग) शकुन्तलायाः (घ) गौतम्याः
उत्तर– (ग) शकुन्तलायाः।

48. प्रियमण्डना का आसीत्?
(क) प्रियंवदा (ख) अनसूया (ग) शकुन्तला (घ) वनदेवता
उत्तर– (ग) शकुन्तला।

49. नवमालिका केन संश्रितवती?
(क) चूतेन (ख) पूतेन (ग) दूतेन (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (क) चूतेन।

50. दुष्यन्तः राजा आसीत् कस्य राजस्य? (2012 EG, 13 BD)
अथवा दुष्यन्तः कस्य देशस्य राजा आसीत्? (2020 ZO)
(क) वाराणसी नगरस्य (ख) मिथिला राजस्य (ग) हस्तिनापुरस्य (घ) कुरु प्रदेशस्य
उत्तर– (ग) हस्तिनापुरस्य।

51. व्रीडां रूपयति–
(क) गौतमी (ख) प्रियंवदा (ग) अनसूया (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (घ) एतेषु न कश्चिदपि।

52. कालिदास के प्रमुख नाटक का नाम है–
(क) मालविकाग्निमित्रम् (ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(ग) उत्तररामचरितम् (घ) ऋतुसंहारम्
उत्तर– (ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

53. 'विक्रमोर्वशीयम्' किसकी कृति है? (2019 CZ, 20 ZP)
***अथवा* 'विक्रमोर्वशीयम्' के रचयिता कौन हैं?** (2019 DF)
(क) कालिदास की (ख) भवभूति की (ग) शूद्रक की (घ) भास की
उत्तर– (क) कालिदास की।

54. 'मालविकाग्निमित्रम्' किसकी कृति है?
(अथवा) 'मालविकाग्निमित्रम्' के रचयिता कौन हैं? (2014 CN)
(क) भवभूति (ख) भास (ग) शूद्रक (घ) कालिदास
उत्तर– (घ) कालिदास।

55. शकुन्तला कस्य ऋषेः आश्रमे न्यवसत्? (2010 CC)
(क) विश्वामित्रस्य (ख) वशिष्ठस्य (ग) कण्वस्य (घ) दुर्वासामुनेः
उत्तर– (ग) कण्वस्य।

56. अभिज्ञानशाकुन्तले मुख्यः रसः कः? (2010 CD, 11 HS)
(अथवा) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य प्रधान रसः अस्ति। (2013 BF, 16 DN)
(क) करुण रसः (ख) शान्त रसः (ग) वीर रसः (घ) शृङ्गार रसः
उत्तर– (घ) शृङ्गार रस।

57. शकुन्तला अनन्यमानसा कं विचिन्तयन्ती आसीत्? (2011 HT, 14 CL)
(अथवा) कं विचिन्तयन्ती शकुन्तला ऋषिरागमनम् न अजायत्? (2013 BH)
(क) वशिष्ठम् (ख) कण्वम् (ग) दुष्यन्तम् (घ) कमपि तपोधनं
उत्तर– (ग) दुष्यन्तम्।

58. कन्या वस्तुतः कस्य धनम् आसीत्? (2012 EF, 13 BF)
(क) गुरोः (ख) मातृपित्रोः (ग) परकीयम् (घ) जन्मदातुः
उत्तर– (ग) परकीयम्।

59. कन्या कस्मै प्रतिपादनीया? (2012 EI)
(क) कदर्याय (ख) वीरपुरुषाय (ग) गुणवते (घ) मानिने
उत्तर– (ग) गुणवते।

60. नवैः तनयाविश्लेषदुःखैः के पीडयन्ते? (2014 CM)
(क) मातरः (ख) पितरः (ग) गुरुवः (घ) गृहिणः
उत्तर– (घ) गृहिणः।

61. शकुन्तलायाः जनकः कः आसीत्? (2014 CQ, 17 NI)
(क) कण्वः (ख) वसिष्ठः (ग) विश्वामित्रः (घ) भूरिश्रवा
उत्तर– (ग) विश्वामित्रः।

62. शकुन्तला कण्वस्य कीदृशी पुत्री आसीत्? (2017 NC)
(क) पालिता (ख) क्रीता (ग) औरसी (घ) निक्षिप्ता
उत्तर– (क) पालिता।

63. परित्यक्तनर्तनाः के? (2017 NC)
(क) मृगाः (ख) मयूराः (ग) शुकाः (घ) शशकाः
उत्तर– (ख) मयूराः।

64. शकुन्तलायाः गमेन मृगीभिः के परित्यक्ताः? (2017 ND)
(क) नर्तनानि (ख) दर्भकवलाः (ग) भ्रमणानि (घ) उत्पतनानि
उत्तर– (ख) दर्भकवलाः।

65. 'लताभगिनी' वनज्योत्स्नां तावदामंत्रयिष्ये।' इति कस्याः उक्तिः? (2017 ND)
(क) शकुन्तलायाः (ख) प्रियंवदायाः (ग) अनसूयायाः (घ) परिचारिकायाः
उत्तर– (क) शकुन्तलायाः।

66. शकुन्तलायाः पतिगृहगमनकाले कस्य हृदयम् उत्कण्ठितं जातम्? (2017 NF)
(क) कण्वस्य (ख) प्रियंवदायाः (ग) विदूषकस्य (घ) शारद्वतस्य
उत्तर– (क) कण्वस्य।

67. 'स्नेहप्रवृत्तिरेवंदर्शिनी' इति कस्योक्तिः? यह कथन किसका है? (2017 NG)
(क) गौतम्याः/गौतमी का (ख) काश्यपस्य/काश्यप का
(ग) अनसूयायाः/अनसूया का (घ) प्रियंवदायाः/प्रियंवदा का
उत्तर– (ख) काश्यपस्य/काश्यप का।

68. कन्या कस्मै दातव्या? (2017 NH)
(क) कुलवते कन्या दातव्या (ख) विद्यावते कन्या दातव्या
(ग) गुणवते कन्या दातव्या (घ) धनवते कन्या दातव्या
उत्तर– (क) कुलवते कन्या दातव्या।

69. दुष्यन्तः कस्य देशस्य राजा आसीत्? (2017 NH, 19 DE)
(क) हस्तिनापुरस्य राजा आसीत् (ख) कोशलस्य राजा आसीत्
(ग) पाटलिपुत्रस्य राजा आसीत् (घ) मथुरायाः राजा आसीत्
उत्तर– (क) हस्तिनापुरस्य राजा आसीत्।

70. भर्तारमालसदृशं सुकृतैर्गता त्वम्'' इति वाक्यं कस्याः विषये कथितम्? (2018 BC)
(क) शकुन्तलायाः (ख) अनसूयायाः (ग) प्रियंवदा (घ) गौतम्याः
उत्तर– (क) शकुन्तलायाः।

71. श्यामकमुष्टिपरिवर्धितकः पुत्रकृतः कः अस्ति? (2018 BC)
(क) धीवरः (ख) तरवः (ग) मृगः (घ) सिंहः
उत्तर– (ग) मृगः।

72. 'हला! एषा युवयोर्हस्ते निक्षेपः' इति कथनं कस्यास्ति? (2018 BG)
(क) दुष्यन्तस्य (ख) शकुन्तलायाः (ग) गौतम्याः (घ) प्रियंवदायाः
उत्तर– (ख) शकुन्तलायाः।

73. काश्यपः केन छन्दसा आशस्ते? (2018 BG)
(क) ऋक्छन्दसा (ख) यजुश्छन्दसा (ग) सामछन्दसा (घ) बिनाछन्दसा
उत्तर– (क) ऋक्छन्दसा।

74. दुर्वासा प्रकृत्या कीदृशी महर्षिरासीत्? (2019 CZ)
(क) क्षमाशीलः (ख) निर्लोभी (ग) सुलभकोपी (घ) अति विनयी
उत्तर– (ग) सुलभकोपी।

75. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना कालिदास की है? (2019 DB)
(क) उत्तररामचरितम् (ख) प्रतिमानाटकम् (ग) मृच्छकटिकम् (घ) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
उत्तर– (घ) अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

76. अभिज्ञानशाकुन्तलम् किसकी रचना है? (2019 DC, DE)
(क) भवभूति (ख) भास (ग) शूद्रक (घ) कालिदास
उत्तर– (घ) कालिदास।

77. सुशिष्यदत्ता विद्येव का? (2019 DC)
(क) अनसूया (ख) शकुन्तला (ग) प्रियंवदा (घ) गौतमी
उत्तर– (ख) शकुन्तला।

78. 'रघुवंश महाकाव्यम्' किसकी कृति है? (2019 DD, 20 ZQ)
(क) भारवि (ख) भवभूति (ग) कालिदास (घ) अश्वघोष
उत्तर– (ग) कालिदास।

79. शकुन्तलां शापं कः अददात्? (2019 DD, 20 ZU)
(क) दुर्वासाः (ख) विश्वामित्रः (ग) कण्वः (घ) परशुरामः
उत्तर– (क) दुर्वासाः।

80. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना कालिदास की नहीं है? (2020 ZS)
(क) रघुवंश महाकाव्यम् (ख) उत्तररामचरितम् (ग) अभिज्ञान शाकुन्तलम् (घ) मेघदूतम्
उत्तर– (क) उत्तररामचरितम्।